Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वस्ति-याग

वेद संस्थान
ओ३म्
अजमेर

विद्यानन्द 'विदेह'

अस्सी पैसे

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

प्रथम संस्करण : २०११ वि (सन् १९५४)
पुनर्मुद्रण : २०१७ वि (सन् १९६०)
पुनर्मुद्रण : २०२४ वि (सन् १९६७)
(अभी तक कुल ६,००० प्रतियाँ मुद्रित)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

प्रकाशक : वेद-संस्थान, पो. बॉ. १५०, अजमेर; मुद्रक : राजहंस प्रिंटर्स, अजमेर

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुभारम्भ

भारत की जनता जहां धर्मप्राण है वहां यज्ञप्राण भी है। यज्ञ में इस देश की जनता की विशेष श्रद्धा है।

यज्ञ विश्वव्यापक है। 'यज्ञ' के अनेक अर्थ हैं। यज्ञ की असंख्य शाखायें हैं। यह जो अग्नि में घृत और हवि की आहुतियां देकर यज्ञ किया जाता है, यह यज्ञ की एक बड़ी उपयोगी और महत्त्वपूर्ण शाखा है।

यदि वैज्ञानिक रीति से विधिपूर्वक अग्नियाग किये जायें तो जहां राष्ट्रों और जनपदों को नीरोग और स्वस्थ रखा जा सकता है, वहां जनता के मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक विकास का मार्ग भी प्रशस्त किया जा सकता है। साधन उपलब्ध होने पर इस दिशा में वेद-संस्थान की ओर से अश्वमेधपर्यन्त अनेक यज्ञपद्धतियां विधिवत् प्रकाशित की जायेंगी जिनमें यज्ञों के विषय में प्रभूत वैज्ञानिक विवेचन होगा।

सर्वप्रथम इस 'स्वस्ति-याग' को प्रकाशित करने का एक विशेष कारण है। गृहस्थों और संस्थाओं द्वारा जो बड़े-बड़े यज्ञ कराये जाते हैं, उनकी अन्तर्निहित भावना स्वस्ति, सुख और शान्ति होती है। इस उद्देश्य की पूर्ति करने-वाली अभी तक एक भी यज्ञपद्धति नहीं है। इस अभाव की पूर्ति के लिए ही यह 'स्वस्ति-याग' है।

इस यज्ञपद्धति के लिए चारों वेदों का सतर्कता तथा मनोयोग के साथ पारायण करके चारों वेदों में पठित स्वस्ति, शम्, शान्ति और ईशनमन के ऐसे समस्त मन्त्रों का संकलन किया गया है, जिनका अग्नियाग में विनियोग विहित हो सकता है।

आशा है यज्ञप्रेमी विद्वान् तथा जनता इसका यथोचित स्वागत करके वेद-संस्थान का उत्साहवर्धन तथा साधनपरिवर्धन करेंगे।

—'विदेह'

CC-0 In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-क्रम

याग-व्यवस्था	....	१
ब्रह्मा-वरण	....	४
ब्रह्मा का यजमान तथा यजमानपत्नी को सम्बोधन	....	४
यागपद्धति (४७१ आहुतियां)	....	७
[स्वस्त्याहुतयः २८७]	....	१३
[शमाहुतयः १५६]	....	६१
[शान्त्याहुतयः ८]	....	६८
[नमस्काराहुतयः २०]	....	८८
आशीर्वाद	....	९२
वामदेव्य-गान	....	९२

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

याग-व्यवस्था

(१) यज्ञस्थल को लीप-पोत कर रोचक और शोभनीय बनाया जाये।

(२) यज्ञवेदि एक अनुभवी ऋत्विज के निरीक्षण में तैयार की जाये।

(३) घृत यथासम्भव घर की गौ का हो। घृत की शुद्धता पर विशेष ध्यान रखा जाये। शुद्ध घी उपलब्ध न होने पर केवल सुगन्धित जड़ी-बूटियों से ही यज्ञ किया जा सकता है।

(४) हवनसामग्री ऋत्वनुसार अनुभवी ऋत्विज की सम्मति से सम्पादन की जाये। जिस ऋतु में वृष्टि की आवश्यकता हो उस ऋतु में अन्न, मेवा, फल और मिष्टान्न की आहुति नहीं देनी चाहिये।

(५) ब्रह्मा के विराजने के लिए यज्ञवेदि के दक्षिण में ऊंची सुन्दर चौकी बिछायें। उस पर सुन्दर वस्त्र बिछाकर ऊपर एक उत्तम आसन लगायें। ब्रह्मा के चौकी पर विराज जाने पर यजमान तथा अन्य इच्छुक जन ब्रह्मा के गले में सूत्र, गोटा अथवा फूलों की माला पहिना कर ब्रह्मा का पूजन [सत्कार] करें।

(६) यजमान तथा यजमानपत्नी यज्ञवेदि के पश्चिम में पूर्वाभिमुख बैठें। पति अथवा पत्नी की अनुपस्थिति में स्त्री वा पुरुष अकेले ही यजमान के आसन पर बैठे। उत्तर तथा पूर्व के आसनों पर दो अन्य सौम्य व्यक्ति बैठें। यज्ञसमाप्ति तक सब अपने आसनों पर बैठे रहें। दर्शकगण वेदि के उत्तर में दक्षिणाभिमुख [ब्रह्माभिमुख] बैठें। सुविधा की दृष्टि से दिशा-परिवर्तन किया जा सकता है।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(७) ब्रह्मा के साथ मन्त्रों का उच्चारण वे ही व्यक्ति करें जो मन्त्रों का पाठ अत्यन्त शुद्धता के साथ कर सकें। शेष व्यक्ति मौनरूपेण मन्त्रों का ध्यानपूर्वक श्रवण करें जिससे वे मन्त्रों का शुद्ध पाठ सीख जायें।

(८) यजमान घृत की आहुति देवे यजमानपत्नी तथा अन्य दोनों व्यक्ति घृतमिश्रित सामग्री की आहुति दें।

(९) घृत तपाकर छाना हुआ हो। सामग्री स्वच्छ और साबुत [बिना कुटी] हो।

(१०) घृत की प्रत्येक आहुति न्यून-से-न्यून आधे माशे की और सामग्री की प्रत्येक आहुति न्यून-से-न्यून एक माशे की हो।

(११) याग का सम्पूर्ण कार्यक्रम चार-पांच घण्टे का है। यदि एक ही समय में पूर्ण करने का विचार हो तो प्रातः सूर्योदय से एक साथ चार-पांच घण्टे यज्ञ किया जाये, किन्तु बीच में स्वस्थ होने के लिए १५ मिनिट का अवकाश देदिया जाये। यदि दो दिन में समाप्त करने का विचार हो तो प्रतिप्रातः सूर्योदय से दो-ढाई घण्टे नित्य यज्ञानुष्ठान किया जाये। सप्ताह वा पक्ष में पूर्ण करना हो तो आधा घण्टा प्रतिप्रातः यज्ञ करें।

(१२) यज्ञ की समाप्ति पर यज्ञस्थल में चौकी पर विराजे हुए ही ब्रह्मा के चरणों में यजमान, यजमानपत्नी तथा अन्य इच्छुक जन पुष्कल द्रव्य, मेवा, फल, नारियल, वस्त्र, पात्र, आदि के रूप में श्रद्धापूर्वक अपनी ओर से भेंट समर्पित करें।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

(१३) यजमान और यजमानपत्नी आगन्तुकों को प्रसाद वितरण करके अभिवादन-सहित विदा करें।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१४) ब्रह्मा को विदा करने से पूर्व यजमान और यजमानपत्नी उसे स्वयं भोजन करायें।

(१५) यज्ञ के दिनों में यजमान और यजमानपत्नी पूर्ण ब्रह्मचर्य से रहें, सर्वथा नवीन अथवा शुद्ध धुले हुए वस्त्र धारण करें, प्रातःसायं दुग्ध का सेवन करें और मध्याह्न में केवल एक समय भोजन करें।

(१६) स्वस्तियाग प्रत्येक शुभावसर, उत्सव वा पर्व पर अथवा इससे पूर्व कराना योग्य है। कष्ट अथवा चिन्ता में ग्रस्त होने पर भी कराना योग्य है।

ब्रह्मा

(१) ब्रह्मा वेदों का विद्वान् हो, प्रयुक्त मन्त्रों का अर्थ समझने और उनका व्याख्यान करने की योग्यता रखता हो, शुद्ध, स्पष्ट और सुमधुर उच्चारण करता हो।

(२) ब्रह्मा वातावरण को अतिशय श्रद्धोपेत और निष्ठापूर्ण रखे।

(३) यज्ञारम्भ करने से पूर्व ब्रह्मा यज्ञस्थल, घृत, सामग्री, समिधा, कपूर तथा अन्य समस्त उपकरणों का निरीक्षण करे और देखे कि सब कुछ स्वच्छ और सुव्यवस्थित है।

(४) यज्ञस्थल में ब्रह्मा उन्हीं वस्त्रों को धारण करे, जो यजमान की ओर से यज्ञार्थ समर्पित किये गये हों। वस्त्र बिना सिले हों। ग्रीष्म ऋतु में चार-पांच गज़ की दो धोतियां तथा ढाई-ढाई गज़ के दो अंगोछे पर्याप्त होंगे। शरद् ऋतु, में एक ऊनी शाल अथवा एक हलका ऊनी कम्बल ओढ़ने के लिए पर्याप्त होगा।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्मा-वरण

यजमान–ओमावसोः सदने सीद ।
ब्रह्मा–ओं सीदामि ।
यजमान–अहमद्य स्वस्तियागकरणाय भवन्तं वृणे ।
ब्रह्मा–वृतोऽस्मि ।

ब्रह्मा का यजमान तथा यजमानपत्नी को सम्बोधन

आप एकाग्र मन से दत्तचित्त होकर पूर्ण श्रद्धा के साथ इस स्वस्तियाग का अनुष्ठान करें। इस यज्ञ में चारों वेदों के स्वस्ति, शम्, शान्ति और ईशनमन के मन्त्रों का पाठ होगा। मैं मंगलकामना करता हूं कि मंगलमय भगवान् आपके परिवार-परिजनों में स्वास्थ्य, नैरोग्य, सुख, सौभाग्य, धर्म, धन और ऐश्वर्य की सर्वतः अभिवृद्धि करे ।

सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः। (य १२/४४)
यजमान की शुभकामनायें पूरी हों ।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यागपद्धति

आचमन

ओं अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ।
ओं अमृतापिधानमसि स्वाहा ।
ओं सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा ।

अङ्गस्पर्श

ओं वाङ् म आस्ये ऽस्तु ।
ओं नसोर्मे प्राणो ऽस्तु ।
ओं अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु ।
ओं कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु ।
ओं बाह्वोर्मे बलमस्तु ।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओं ऊर्वोर्मे ओजो ऽस्तु ।
ओं अरिष्टानि मे ऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु ।

ध्यान रहे

आगे सब मन्त्रों के आदि में 'ओं' का उच्चारण करके मन्त्रों का पाठ करें। जिन मन्त्रों से आहुतियां दी जानी हैं उनके अन्त में 'स्वाहा' बोलकर आहुति दी जायेंगी। घृत तथा हवि की समस्त आहुतियां 'स्वाहा' कहते ही एक साथ यज्ञवेदि में छोड़ी जानी चाहियें।

प्रार्थना

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव ।
यद्भद्रं तन्न आ सुव । (य ३०-३)
हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम । (य १३-४)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः ।
यस्य छाया ऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम । (य २५-१३)

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव ।
य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम । (य २३-३)

येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्व स्तभितं येन नाकः ।
यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम । (य ३२-६)

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव ।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् । (ऋ १०-१२१-१०)

स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा ।
यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त । (य ३२-१०)

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम । (य ४०-१६)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्न्याधान

भूर्भुवः स्वः । (य ३६-३)—इससे अग्नि लाना वा कपूर जलाना ।

भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा ।
तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे । (य ३-५)—इससे अग्नि को यज्ञवेदि में रखना ।

अग्नि-प्रज्वलन

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते संसृजेथामयं च ।
अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत । (य १५-५४)—इससे अग्नि प्रज्वलित करना ।

समिदाधान

१. समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम् ।
आस्मिन् हव्या जुहोतन । स्वाहा । इदमग्नये इदं न मम । (य ३-१)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२. सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन।
अग्नये जातवेदसे। स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे इदं न मम। (य ३-२)

३. तं त्वा समिद्भिरंगिरो घृतेन वर्धयामसि।
बृहच्छोचा यविष्ठ्य। स्वाहा। इदमग्नये ऽङ्गिरसे इदं न मम। (य ३-३)

पञ्च घृताहुतयः

अयं त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय
चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा।
इदमग्नये जातवेदसे इदं न मम।

जलसिञ्चन

अदिते ऽनुमन्यस्व। [पूर्व में]
अनुमते ऽनुमन्यस्व। [पश्चिम में]

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरस्वत्यनुमन्यस्व । [उत्तर में]

देव सवितः प्र सुव यज्ञं प्र सुव यज्ञपतिं भगाय ।
दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु । (य ३०-१) [चारों ओर]

घृताहुतयः

अग्नये स्वाहा । इदमग्नये इदं न मम । [उत्तर में]
सोमाय स्वाहा । इदं सोमाय इदं न मम । [दक्षिण में]
प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये इदं न मम ।
इन्द्राय स्वाहा । इदमिन्द्राय इदं न मम ।
भूरग्नये स्वाहा । इदमग्नये इदं न मम ।
भुवर्वायवे स्वाहा । इदं वायवे इदं न मम ।
स्वरादित्याय स्वाहा । इदमादित्याय इदं न मम ।
भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा । इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः इदं न मम ।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वस्त्याहुतयः

१ स नः पितेव सूनवे ऽग्ने सूपायनो भव । सचस्वा नः स्वस्तये । (ऋ १-१-९)

२ इहेन्द्राणीमुप ह्वये वरुणानीं स्वस्तये । अग्नायीं सोमपीतये । (ऋ १-२२-१२)

३ ह्वयाम्यग्निं प्रथमं स्वस्तये ह्वयामि मित्रावरुणाविहावसे ।
ह्वयामि रात्रीं जगतो निवेशनीं ह्वयामि देवं सवितारमूतये । (ऋ १-३५-१)

४ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियंजिन्वमवसे हूमहे वयम् ।
पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये । (ऋ १-८९-५)

५ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु । (ऋ १-८९-६)

६ उत नो धियो गोअग्राः पूषन् विष्णवेवयावः । कर्ता नः स्वस्तिमतः । (ऋ १-९०-५)

७ स नः सिन्धुमिव नावयाति पर्षा स्वस्तये । अप नः शोशुचदघम् । (ऋ १-९७-८)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८ यमश्विना ददथुः श्वेतमश्वमघाश्वाय शश्वदित् स्वस्ति ।
तद्वां दात्रं महि कीर्तेन्यं भूत् पैद्वो वाजी सदमिद्धव्यो अर्यः । (ऋ १-११६-६)

९ हिमेनाग्निं घ्रंसमवारयेथां पितुमतीमूर्जमस्मा अधत्तम् ।
ऋबीसे अत्रिमश्विनावनीतमुन्निन्यथुः सर्वगणं स्वस्ति । (ऋ १-११६-८)

१० अजोहवीदश्विना तौग्र्यो वां प्रोळ्हः समुद्रमव्यथिर्जगन्वान् ।
निष्टमूहथुः सुयुजा रथेन मनोजवसा वृषणा स्वस्ति । (१-११७-१५)

११ त्वं धुनिरिन्द्र धुनिमतीर्ऋणोरपः सीरा न स्रवन्तीः ।
प्र यत् समुद्रमति शूर पर्षि पारया तुर्वशं यदुं स्वस्ति । (ऋ १-१७४-९)

१२ अग्ने त्वं पारया नव्यो अस्मान्त्स्वस्तिभिरति दुर्गाणि विश्वा ।
पूश्च पृथ्वी बहुला न उर्वी भवा तोकाय तनयाय शं योः । (ऋ १-१८९-२)

१३ स नो रेवत् समिधानः स्वस्तये संददस्वान्रयिमस्मासु दीदिहि ।
आ नः कृणुष्व सुविताय रोदसी अग्ने हव्या मनुषो देव वीतये । (ऋ २-२-६)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१४ सैनानीकेन सुविदत्रो अस्मे यष्टा देवाँ आयजिष्ठः स्वस्ति ।
अदब्धो गोपा उत नः परस्पा अग्ने द्युमदुत रेवद्दिदीहि । (ऋ २-९-६)

१५ स ईं महीं धुनिमेतोररम्णात् सो अस्नातॄनपारयत् स्वस्ति ।
त उत्स्नाय रयिमभि प्र तस्थुः सोमस्य ता मद इन्द्रश्चकार । (ऋ २-१५-५)

१६ किमू नु वः कृणवामापरेण किं सनेन वसव आप्येन ।
यूयं नो मित्रावरुणादिते च स्वस्तिमिन्द्रामरुतो दधात । (ऋ २-२९-३)

१७ या गुङ्गूर्या सिनीवाली या राका या सरस्वती ।
इन्द्राणीमह्व ऊतये वरुणानीं स्वस्तये । (ऋ २-३२-८)

१८ श्रेष्ठो जातस्य रुद्र श्रियासि तवस्तमस्तवसां वज्रबाहो ।
पर्षि णः पारमंहसः स्वस्ति विश्वा अभीती रपसो युयोधि । (ऋ २-३३-३)

१९ उदु ष्य देवः सविता सवाय शश्वत्तमं तदपा वह्निरस्थात् ।
नूनं देवेभ्यो वि हि धाति रत्नमथाभजद्वीतिहोत्रं स्वस्तौ । (ऋ २-३८-१)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२० न यस्येन्द्रो वरुणो न मित्रो व्रतमर्यमा न मिनन्ति रुद्रः ।
नारातयस्तमिदं स्वस्ति हुवे देवं सवितारं नमोभिः । (ऋ २-३८-९)

२१ स नः पावक दीदिहि द्युमदस्मे सुवीर्यम् ।
भक्ष स्तोतृभ्यो अन्तमः स्वस्तये । (ऋ ३-१०-८)

२२ स्वस्तये वाजिभिश्च प्रणेतः सं यन्महीरिष आसत्सि पूर्वीः ।
रायो वन्तारो बृहतः स्यामास्मे अस्तु भग इन्द्र प्रजावान् । (ऋ ३-३०-१८)

२३ मिहः पावकाः प्रतता अभूवन्त्स्वस्ति नः पिपृहि पारमासाम् ।
इन्द्र त्वं रथिरः पाहि नो रिषो मक्षूमक्षू कृणुहि गोजितो नः । (ऋ ३-३१ २०)

२४ युवं प्रत्नस्य साधथो महो यद्दैवी स्वस्तिः परि णः स्यातम् ।
गोपाजिह्वस्य तस्थुषो विरूपा विश्वे पश्यन्ति मायिनः कृतानि । (ऋ ३-३८-९)

२५ अयमस्मान् वनस्पतिर्मा च हा मा च रीरिषत् ।
स्वस्त्या गृहेभ्य आवसा आ विमोचनात् । (ऋ ३-५३-२०)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२६ आरे अस्मदमतिमारे अंह आरे विश्वां दुर्मतिं यन्निपासि ।
दोषा शिवः सहसः सूनो अग्ने यं देव आ चित् सचसे स्वस्ति । (ऋ ४-११-६)

२७ अस्माँ इहा वृणीष्व सख्याय स्वस्तये ।
महो राये दिवित्मते । (ऋ ४-३१-११)

२८ दधिक्राव्ण इष ऊर्जो महो यदमन्महि मरुतां नाम भद्रम् ।
स्वस्तये वरुणं मित्रमग्निं हवामह इन्द्रं वज्रबाहुम् । (ऋ ४-३९-४)

२९ प्र पस्त्यामदितिं सिन्धुमर्कैः स्वस्तिमीळे सख्याय देवीम् ।
उभे यथा नो अहनी निपात उषासानक्ता करतामदब्धे । (ऋ ४-५५-३)

३० यस्मै त्वं सुकृते जातवेद उ लोकमग्ने कृणवः स्योनम् ।
अश्विनं स पुत्रिणं वीरवन्तं गोमन्तं रयिं नशते स्वस्ति । (ऋ ५-४-११)

३१ नू न एहि वार्यमग्ने गृणान आ भर ।
ये वयं ये च सूरयः स्वस्ति धामहे सचोतैधि पृत्सु नो वृधे । (ऋ ५-१६-५)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३२ नू न इद्धि वार्यमासा सचन्त सूरयः ।
ऊर्जो नपादभिष्टये पाहि शग्धि स्वस्तय उतैधि पृत्सु नो वृधे । (ऋ ५-१७-५)

३३ समिध्यमानो अमृतस्य राजसि हविष्कृण्वन्तं सचसे स्वस्तये ।
विश्वं स धत्ते द्रविणं यमिन्वस्यातिथ्यमग्ने नि च धत्त इत् पुरः । (ऋ ५-२८-२)

३४ समिन्द्र णो मनसा नेषि गोभिः सं सूरिभिर्हरिवः सं स्वस्ति ।
सं ब्रह्मणा देवहितं यदस्ति सं देवानां सुमत्या यज्ञियानाम् । (ऋ ५-४२-४)

३५ एषः स्तोमो मारुतं शर्धो अच्छा रुद्रस्य सूनूँर्युवन्यूँ रुदश्याः ।
कामो राये हवते मा स्वस्त्युप स्तुहि पृषदश्वाँ अयासः । (ऋ ५-४२-१५)

३६ एष ते देव नेता रथस्पतिः शं रयिः ।
शं राये शं स्वस्तय इषःस्तुतो मनामहे देवस्तुतो मनामहे । (ऋ ५-५०-५)

३७ स्वस्ति नो मिमीतामश्विना भगः स्वस्ति देव्यदितिरनर्वणः ।
स्वस्ति पूषा असुरो दधातु नः स्वस्ति द्यावापृथिवी सुचेतुना । (ऋ ५-५१-११)

CC-0 In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३८ स्वस्तये वायुमुप ब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः ।
बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्यासो भवन्तु नः । (ऋ ५-५१-१२)

३९ विश्वे देवा नो अद्या स्वस्तये वैश्वानरो वसुरग्निः स्वस्तये ।
देवा अवन्त्वृभवः स्वस्तये स्वस्ति नो रुद्रः पात्वंहसः । (ऋ ५-५१-१३)

४० स्वस्ति मित्रावरुणा स्वस्ति पथ्ये रेवति ।
स्वस्ति न इन्द्रश्चाग्निश्च स्वस्ति नो अदिते कृधि । (ऋ ५-५१-१४)

४१ स्वस्ति पन्थामनु चरेम सूर्याचन्द्रमसाविव ।
पुनर्ददताघ्नता जानता सं गमेमहि । (ऋ ५-५१-१५)

४२ अतीयाम निदस्तिरः स्वस्तिभिर्हित्वावद्यमरातीः ।
वृष्ट्वी शं योराप उस्रि भेषजं स्याम मरुतः सह । (ऋ ५-५३-१४)

४३ युवं नो येषु वरुण क्षत्रं बृहच्च बिभृथः ।
उरु णो वाजसातये कृतं राये स्वस्तये । (ऋ ५-६४-६)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४४ अच्छा नो मित्रमहो देव देवानग्ने वोचः सुमतिं रोदस्योः ।
वीहि स्वस्तिं सुक्षितिं दिवो नॄन् द्विषो अंहांसि दुरिता तरेम ता तरेम तवावसा तरेम । (ऋ ६-२-११)
४५ नू नो अग्ने ऽवृकेभिः स्वस्ति वेषि रायः पथिभिः पर्ष्यंहः ।
ता सूरिभ्यो गृणते रासि सुम्नं मदेम शतहिमाः सुवीराः । (ऋ ६-४-८)
४६ अच्छा नो मित्रमहो देव देवानग्ने वोचः सुमतिं रोदस्योः ।
वीहि स्वस्तिं सुक्षितिं दिवो नॄन् द्विषो अंहांसि दुरिता तरेम ता तरेम तवावसा तरेम ।
(ऋ ६-१४-६)
४७ जनिष्वा देववीतये सर्वताता स्वस्तये ।
आ देवान् वक्ष्यमृताँ ऋतावृधो यज्ञं देवेषु पिस्पृशः । (ऋ ६-१५-१८)
४८ प्र श्येनो न मदिरमंशुमस्मै शिरो दासस्य नमुचेर्मथायन् ।
प्रावन्नमीं साप्यं ससन्तं पृणग्राया समिषा सं स्वस्ति । (ऋ ६-२०-६)
४९ त्वं धुनिरिन्द्र धुनिमतीर्ऋणोरपः सीरा न स्रवन्तीः ।
प्र यत् समुद्रमति शूर पर्षि पारया तुर्वशं यदुं स्वस्ति । (ऋ ६-२०-१२)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५० आ संयतमिन्द्र णः स्वस्ति शत्रुतूर्याय बृहतीममृध्राम् ।
यया दासान्यार्याणि वृत्रा करो वज्रिन्त्सुतुका नाहुषाणि । (ऋ ६-२२-१०)

५१ इन्द्र त्रिधातु शरणं त्रिवरूथं स्वस्तिमत् ।
छर्दिर्यच्छ मघवद्भ्यश्च मह्यं च यावया दिद्युमेभ्यः । (ऋ ६-४६-९)

५२ उरुं नो लोकमनु नेषि विद्वान्त्स्वर्वज्ज्योतिरभयं स्वस्ति ।
ऋष्वा त इन्द्र स्थविरस्य बाहू उप स्थेयाम शरणा बृहन्ता । (ऋ ६-४७-८)

५३ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं हवेहवे सुहवं शूरमिन्द्रम् ।
ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रं स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः । (ऋ ६-४७-११)

५४ अपि पन्थामगन्महि स्वस्तिगामनेहसम् ।
येन विश्वाः परि द्विषो वृणक्ति विन्दते वसु । (ऋ ६-५१-१६)

५५ आ ते स्वस्तिमीमह आरेअघामुपावसुम् ।
अद्या च सर्वतातये श्वश्च सर्वतातये । (ऋ ६-५६-६)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५६ इन्द्रा नु पूषणा वयं सख्याय स्वस्तये । हुवेम वाजसातये । (ऋ ६-५७-१)
५७ उत् पूषणं युवामहे ऽभीशूँरिव सारथिः । मह्या इन्द्रं स्वस्तये । (ऋ ६-५७-६)
५८ नू मे ब्रह्माण्यग्न उच्छशाधि त्वं देव मघवद्भ्यः सुषूदः ।
रातौ स्यामोभयास आ ते यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-१-२०)
५९ नू मे ब्रह्माण्यग्न उच्छशाधि त्वं देव मघवद्भ्यः सुषूदः ।
रातौ स्यामोभयास आ ते यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-१ २५)
६० एता नो अग्ने सौभगा दिदीह्यपि क्रतुं सुचेतसं वतेम ।
विश्वा स्तोतृभ्यो गृणते च सन्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-३-१०)
६१ एता नो अग्ने सौभगा दिदीह्यपि क्रतुं सुचेतसं वतेम ।
विश्वा स्तोतृभ्यो गृणते च सन्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-४-१०)
६२ नू त्वामग्न ईमहे वसिष्ठा ईशानं सूनो सहसो वसूनाम् ।
इषं स्तोतृभ्यो मघवद्भ्य आनड् यूयं पात स्वस्तिभि सदा नः । (ऋ ७-७-७)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६३ नू त्वामग्न ईमहे वसिष्ठा ईशानं सूनो सहसो वसूनाम् ।
इषं स्तोतृभ्यो मघवद्भ्य आनड् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-८-७)

६४ त्वामग्ने समिधानो वसिष्ठो जरूथं हन् यक्षि राये पुरंधिम् ।
पुरुणीथा जातवेदो जरस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-९-६)

६५ आग्ने वह हविरद्याय देवानिन्द्रज्येष्ठास इह मादयन्ताम् ।
इमं यज्ञं दिवि देवेषु धेहि यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-११-५)

६६ त्वं वरुण उत मित्रो अग्ने त्वां वर्धन्ति मतिभिर्वसिष्ठाः ।
त्वे वसु सुषणनानि सन्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-१२-३)

६७ जातो यदग्ने भुवना व्यख्यः पशून् न गोपा इर्यः परिज्मा ।
वैश्वानर ब्रह्मणे विन्द गातुं यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-१३-३)

६८ आ नो देवेभिरुप देवहूतिमग्ने याहि वषट्कृतिं जुषाणः ।
तुभ्यं देवाय दाशतः स्याम यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-१४-३)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६९ नू इन्द्र शूर स्तवमान ऊती ब्रह्मजूतस्तन्वा वावृधस्व ।
उप नो वाजान् मिमीह्यु प स्तीन् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ।(ऋ ७-१९-११)

७० स न इन्द्र त्वयताया इषे धास्त्मना च ये मघवानो जुनन्ति ।
वस्वी षु ते जरित्रे अस्तु शक्तिर्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-२०-१०)

७१ स न इन्द्र त्वयताया इषे धास्त्मना च ये मघवानो जुनन्ति ।
वस्वी षु ते जरित्रे अस्तु शक्तिर्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-२१-१०)

७२ ये च पूर्व ऋषयो ये च नूत्ना इन्द्र ब्रह्माणि जनयन्त विप्राः ।
अस्मे ते सन्तु सख्या शिवानि यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-२२-९)

७३ एवेदिन्द्रं वृषणं वज्रबाहुं वसिष्ठासो अभ्यर्चन्त्यर्कैः ।
स नः स्तुतो वीरवद्धातु गोमद्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-२३-६)

७४ एवा न इन्द्र वार्यस्य पूर्धि प्र ते महीं सुमतिं वेविदाम ।
इषं पिन्व मघवद्भ्यः सुवीरां यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-२४-६)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७५ एवा न इन्द्र वार्यस्य पूर्धि प्र ते महीं सुमतिं वेविदाम ।
इषं पिन्व मघवद्भ्यः सुवीरां यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-२५-६)

७६ एवा वसिष्ठ इन्द्रमूतये नॄन् कृष्टीनां वृषभं सुते गृणाति ।
सहस्रिण उप नो माहि वाजान् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-२६-५)

७७ नू इन्द्र राये वरिवस्कृधी न आ ते मनो ववृत्याम मघाय ।
गोमदश्वावद् रथवद् व्यन्तो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-२७-५)

७८ वोचेमेदिन्द्रं मघवानमेनं महो रायो राधसो यद्ददन्नः ।
यो अर्चतो ब्रह्मकृतिमविष्ठो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-२८-५)

७९ वोचेमेदिन्द्रं मघवानमेनं महो रायो राधसो यद्ददन्नः ।
यो अर्चतो ब्रह्मकृतिमविष्ठो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-२९-५)

८० वोचेमेदिन्द्रं मघवानमेनं महो रायो राधसो यद्ददन्नः ।
यो अर्चतो ब्रह्मकृतिमविष्ठो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-३०-५)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८१ तन्न इन्द्रो वरुणो मित्रो अग्निराप ओषधीर्वनिनो जुषन्त ।
शर्मन्त्स्याम मरुतामुपस्थे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-३४-२५)

८२ ये देवानां यज्ञिया यज्ञियानां मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः ।
ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-३५-१५)

८३ अच्छायं वो मरुतः श्लोक एत्वच्छा विष्णुं निषिक्तपामवोभिः ।
उत प्रजायै गृणते वयो धुर्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-३६-९)

८४ आ नो राधांसि सवितः स्तवध्या आ रायो यन्तु पर्वतस्य रातौ ।
सदा नो दिव्यः पायुः सिषक्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-३७-८)

८५ प्र वावृजे सुप्रया बर्हिरेषामा विश्पतीव बीरिट इयाते ।
विशामक्तोरुषसः पूर्वहूतौ वायुः पूषा स्वस्तये नियुत्वान् । (ऋ ७-३९-२)

८६ नू रोदसी अभिष्टुते वसिष्ठैर्ऋतावानो वरुणो मित्रो अग्निः ।
यच्छन्तु चन्द्रा उपमं नो अर्कं यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-३९-७)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८७ नू रोदसी अभिष्टुते वसिष्ठैर्ऋतावानो वरुणो मित्रो अग्निः ।
यच्छन्तु चन्द्रा उपमं नो अर्कं यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-४०-७)

८८ अश्वावतीर्गोमतीर्न उषासो वीरवतीः सदमुच्छन्तु भद्राः ।
घृतं दुहाना विश्वतः प्रपीता यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-४१-७)

८९ एवाग्निं सहस्यं वसिष्ठो रायस्कामो विश्वप्स्न्यस्य स्तौत् ।
इषं रयिं पप्रथद्वाजमस्मे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-४२-६)

९० एवा नो अग्ने विक्ष्वा दशस्य त्वया वयं सहसावन्नास्क्राः ।
राया युजा सधमादो अरिष्टा यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-४३-५)

९१ इमा गिरः सवितारं सुजिह्वं पूर्णगभस्तिमीळते सुपाणिम् ।
चित्रं वयो बृहदस्मे दधातु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-४५-४)

९२ मा नो वधी रुद्र मा परा दा मा ते भूम प्रसितौ हीळितस्य ।
आ नो भज बर्हिषि जीवशंसे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-४६-४)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

९३ याः सूर्यो रश्मिभिराततान याभ्य इन्द्रो अरदद् गातुमूर्मिम् ।
ते सिन्धवो वरिवो धातना नो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-४७-४)

९४ नू देवासो वरिवः कर्तना नो भूत नो विश्वे ऽवसे सजोषाः ।
समस्मे इषं वसवो ददीरन् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-४८-४)

९५ आदित्या विश्वे मरुतश्च विश्वे देवाश्च विश्व ऋभवश्च विश्वे ।
इन्द्रो अग्निरश्विना तुष्टुवाना यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-५१-३)

९६ उतो हि वां रत्नधेयानि सन्ति पुरूणि द्यावापृथिवी सुदासे ।
अस्मे धत्तं यदसदस्कृधोयु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-५३-३)

९७ वास्तोष्पते शग्मया संसदा ते सक्षीमहि रण्वया गातुमत्या ।
पाहि क्षेम उत योगे वरं नो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-५४-३)

९८ तन्न इन्द्रो वरुणो मित्रो अग्निराप ओषधीर्वनिनो जुषन्त ।
शर्मन्त्स्याम मरुतामुपस्थे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-५६-२५)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

९९ आ स्तुतासो मरुतो विश्व ऊती अच्छा सूरीन्त्सर्वताता जिगात ।
ये नस्त्मना शतिनो वर्धयन्ति यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-५७-७)

१०० प्र सा वाचि सुष्टुतिर्मघोनामिदं सूक्तं मरुतो जुषन्त ।
आराच्चिद् द्वेषो वृषणो युयोत यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-५८-६)

१०१ इयं देव पुरोहितिर्युवभ्यां यज्ञेषु मित्रावरुणावकारि ।
विश्वानि दुर्गा पिपृतं तिरो नो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-६०-१२)

१०२ इयं देव पुरोहितिर्युवभ्यां यज्ञेषु मित्रावरुणावकारि ।
विश्वानि दुर्गा पिपृतं तिरो नो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७ ६१-७)

१०३ नू मित्रो वरुणो अर्यमा नस्त्मने तोकाय वरिवो दधन्तु ।
सुगा नो विश्वा सुपथानि सन्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-६२-६)

१०४ नू मित्रो वरुणो अर्यमा नस्त्मने तोकाय वरिवो दधन्तु ।
सुगा नो विश्वा सुपथानि सन्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-६३-६)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१०५ एष स्तोमो वरुण मित्र तुभ्यं सोमः शुक्रो न वायवे ऽयामि ।
अविष्टं धियो जिगृतं पुरंधीर्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-६४-५)

१०६ एष स्तोमो वरुण मित्र तुभ्यं सोमः शुक्रो न वायवे ऽयामि ।
अविष्टं धियो जिगृतं पुरंधीर्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-६५-५)

१०७ नू मे हवमा शृणुतं युवाना यासिष्टं वर्तिरश्विनाविरावत् ।
धत्तं रत्नानि जरतं च सूरीन् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-६७-१०)

१०८ एष स्य कारुर्जरते सूक्तैरग्रे बुधान उषसां सुमन्मा ।
इषा तं वर्धदघ्न्या पयोभिर्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-६८-९)

१०९ नू मे हवमा शृणुतं युवाना यासिष्टं वर्तिरश्विनाविरावत् ।
धत्तं रत्नानि जरतं च सूरीन् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-६९-८)

११० इयं मनीषा इयमश्विना गीरिमां सुवृक्तिं वृषणा जुषेथाम् ।
इमा ब्रह्माणि युवयून्यग्मन् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-७०-७)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१११ इयं मनीषा इयमश्विना गीरिमां सुवृक्तिं वृषणा जुषेथाम् ।
इमा ब्रह्माणि युवयून्यग्मन् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-७१-६)

११२ आ पश्चातान्नासत्या पुरस्तादाश्विना यातमधरादुदक्तात् ।
आ विश्वतः पाञ्चजन्येन राया यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-७२-५)

११३ आ पश्चातान्नासत्या पुरस्तादाश्विना यातमधरादुदक्तात् ।
आ विश्वतः पाञ्चजन्येन राया यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-७३-५)

११४ नू नो गोमद्वीरवद्धेहि रत्नमुषो अश्वावत् पुरुभोजो अस्मे ।
मा नो बर्हिः पुरुषता निदे कर्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-७५-८)

११५ एषा नेत्री राधसः सूनृतानामुषा उच्छन्ती रिभ्यते वसिष्ठैः ।
दीर्घश्रुतं रयिमस्मे दधाना यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-७६-७)

११६ यां त्वा दिवो दुहितर्वर्धयन्त्युषः सुजाते मतिभिर्वसिष्ठाः ।
सास्मासु धा रयिमृष्वं बृहन्तं यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-७७-६)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

११७ प्रति त्वाद्य सुमनसो बुधन्तास्माकासो मघवानो वयं च ।
तिल्विलायध्वमुषसो विभातीर्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-७८ ५)

११८ देवंदेवं राधसे चोदयन्त्यस्मद्र्यक्सूनृता ईरयन्ती ।
व्युच्छन्ती नः सनये धियो धा यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-७९-५)

११९ अश्वावतीर्गोमतीर्न उषासो वीरवतीः सदमुच्छन्तु भद्राः ।
घृतं दुहाना विश्वतः प्रपीता यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-८०-३)

१२० इयमिन्द्रं वरुणमष्ट मे गीः प्रावत् तोके तनये तूतुजाना ।
सुरत्नासो देववीतिं गमेम यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-८४-५)

१२१ इयमिन्द्रं वरुणमष्ट मे गीः प्रावत् तोके तनये तूतुजाना ।
सुरत्नासो देववीतिं गमेम यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-८५-५)

१२२ अयं सु तुभ्यं वरुण स्वधावो हृदि स्तोम उपश्रितश्चिदस्तु ।
शं नः क्षेमे शमु योगे नो अस्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-८६-८)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१२३ यो मृळयाति चक्रुषे चिदागो वयं स्याम वरुणे अनागाः ।
अनु व्रतान्यदितेर्ऋधन्तो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-८७-७)

१२४ ध्रुवासु त्वासु क्षितिषु क्षियन्तो व्यस्मत् पाशं वरुणो मुमोचत् ।
अवो वन्वाना अदितेरुपस्थाद्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-८८-७)

१२५ अर्वन्तो न श्रवसो भिक्षमाणा इन्द्रवायू सुष्टुतिभिर्वसिष्ठाः ।
वाजयन्तः स्ववसे हुवेम यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-९०-७)

१२६ अर्वन्तो न श्रवसो भिक्षमाणा इन्द्रवायू सुष्टुतिभिर्वसिष्ठाः ।
वाजयन्तः स्ववसे हुवेम यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-९१-७)

१२७ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरं सहस्रिणीभिरुप याहि यज्ञम् ।
वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-९२-५)

१२८ एता अग्न आशुषाणास इष्टीर्युवोः सचाभ्यश्याम वाजान् ।
मेन्द्रो नो विष्णुर्मरुतः परि ख्यन् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-९३-८)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१२९ अयमु ते सरस्वति वसिष्ठो द्वारावृतस्य सुभगे व्यावः ।
वर्ध शुभ्रे स्तुवते रासि वाजान् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-९५-६)

१३० बृहस्पते युवमिन्द्रश्च वस्वो दिव्यस्येशाथे उत पार्थिवस्य ।
धत्तं रयिं स्तुवते कीरये चिद्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-९७-१०)

१३१ बृहस्पते युवमिन्द्रश्च वस्वो दिव्यस्येशाथे उत पार्थिवस्य ।
धत्तं रयिं स्तुवते कीरये चिद्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-९८-७)

१३२ वषट् ते विष्णवास आ कृणोमि तन्मे जुषस्व शिपिविष्ट हव्यम् ।
वर्धन्तु त्वा सुष्टुतयो गिरो मे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-९९-७)

१३३ वषट् ते विष्णवास आ कृणोमि तन्मे जुषस्व शिपिविष्ट हव्यम् ।
वर्धन्तु त्वा सुष्टुतयो गिरो मे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-१००-७)

१३४ स रेतोधा वृषभः शश्वतीनां तस्मिन्नात्मा जगतस्तस्थुषश्च ।
तन्म ऋतं पातु शतशारदाय यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-१०१-६)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१३५ स नः पर्षिः पारयाति स्वस्ति नावा पुरुहूतः । इन्द्रो विश्वा अति द्विषः । (ऋ ८-१६-११)

१३६ बृहद्वरूथं मरुतां देवं त्रातारमश्विना । मित्रमीमहे वरुणं स्वस्तये । (ऋ ८-१८-२०)

१३७ ऐतु पूषा रयिर्भगः स्वस्ति सर्वधातमः । उरुरध्वा स्वस्तये । (ऋ ८-३१-११)

१३८ सोम राजन् मृळया नः स्वस्ति तव स्मसि व्रत्यास्तस्य विद्धि ।
अलर्ति दक्ष उत मन्युरिन्दो मा नो अर्यो अनुकामं परा दाः । (ऋ ८-४८-८)

१३९ आ तू सुशिप्र दम्पते रथं तिष्ठा हिरण्ययम् ।
अध द्युक्षं सचेवहि सहस्रपादमरुषं स्वस्तिगामनेहसम् । (ऋ ८-६९-१६)

१४० ऋधक् सोम स्वस्तये संजग्मानो दिवः कविः । पवस्व सूर्यो दृशे । (ऋ ९-६४-३०)

१४१ परि सोम प्र धन्वा स्वस्तये नृभिः पुनानो अभि वासयाशिरम् ।
ये ते मदा आहनसो विहायसस्तेभिरिन्द्रं चोदय दातवे मघम् । (ऋ ९-७५-५)

१४२ पवस्व देवमादनो विचर्षणिरप्सा इन्द्राय वरुणाय वायवे ।
कृधी नो अद्य वरिवः स्वस्तिमदुरुक्षितौ गृणीहि दैव्यं जनम् । (ऋ ९-८४-१)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१४३ एवा राजेव क्रतुमाँ अमेन विश्वा घनिघ्नद् दुरिता पवस्व ।
इन्दो सूक्ताय वचसे वयो धा यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ९-९०-६)

१४४ अजीतये ऽहतये पवस्व स्वस्तये सर्वतातये बृहते ।
तदुशन्ति विश्व इमे सखायस्तदहं वश्मि पवमान सोम । (ऋ ९-९६-४)

१४५ समु प्रियो मृज्यते सानो अव्ये यशस्तरो यशसां क्षैतो अस्मे ।
अभि स्वर धन्वा पूयमानो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । ऋ (९-९७-३)

१४६ स्तोत्रे राये हरिरर्षा पुनान इन्द्रं मदो गच्छतु ते भराय ।
देवैर्याहि सरथं राधो अच्छा यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ९-९७-६)

१४७ एवा नः सोम परिषिच्यमान आ पवस्व पूयमानः स्वस्ति ।
इन्द्रमा विश बृहता रवेण वर्धया वाचं जनया पुरंधिम् । (ऋ ९-९७-३६)

१४८ स्वस्ति नो दिवो अग्ने पृथिव्या विश्वायुर्धेहि यजथाय देव ।
सचेमहि तव दस्म प्रकेतैरुरुष्या ण उरुभिर्देव शंसैः । ऋ (१०-७-१)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१४९ यौ ते श्वानौ यम रक्षितारौ चतुरक्षौ पथिरक्षी नृचक्षसौ ।
ताभ्यामेनं परि देहि राजन्त्स्वस्ति चास्मा अनमीवं च धेहि । (ऋ १०-१४-११)

१५० पूषेमा आशा अनु वेद सर्वाः सो अस्माँ अभयतमेन नेषत् ।
स्वस्तिदा आघृणिः सर्ववीरो ऽप्रयुच्छन् पुर एतु प्रजानन् । (ऋ १०-१७-५)

१५१ द्यावा नो अद्य पृथिवी अनागसो मही त्रायेतां सुविताय मातरा ।
उषा उच्छन्त्यप बाधतामघं स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे । (ऋ १०-३५-३)

१५२ इयं न उस्रा प्रथमा सुदेव्यं रेवत् सनिभ्यो रेवती व्युच्छतु ।
आरे मन्युं दुर्विदत्रस्य धीमहि स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे । (ऋ १०-३५-४)

१५३ प्र याः सिस्रते सूर्यस्य रश्मिभिर्ज्योतिर्भरन्तीरुषसो व्युष्टिषु ।
भद्रा नो अद्य श्रवसे व्युच्छत स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे । (ऋ १०-३५-५)

१५४ अनमीवा उषस आ चरन्तु न उदग्नयो जिहतां ज्योतिषा बृहत् ।
आयुक्षातामश्विना तूतुजिं रथं स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे । (ऋ १०-३५-६)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१५५ श्रेष्ठं नो अद्य सवितर्वरेण्यं भागमा सुव स हि रत्नधा असि ।
रायो जनित्रीं धिषणामुप ब्रुवे स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे । (ऋ १०-३५-७)

१५६ पिपर्तु मा तदृतस्य प्रवाचनं देवानां यन्मनुष्या अमन्महि ।
विश्वा इदुस्राः स्पळुदेति सूर्यः स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे । (ऋ १०-३५-८)

१५७ अद्वेषो अद्य बर्हिषः स्तरीमणि ग्राव्णां योगे मन्मनः साध ईमहे ।
आदित्यानां शर्मणि स्था भुरण्यसि स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे । (ऋ १०-३५-९)

१५८ आ नो बर्हिः सधमादे बृहद्दिवि देवाँ ईळे सादया सप्त होतॄन् ।
इन्द्रं मित्रं वरुणं सातये भगं स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे । (ऋ १०-३५-१०)

१५९ त आदित्या आ गता सर्वतातये वृधे नो यज्ञमवता सजोषसः ।
बृहस्पतिं पूषणमश्विना भगं स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे । (ऋ १०-३५-११)

१६० तन्नो देवा यच्छत सुप्रवाचनं छर्दिरादित्याः सुभरं नृपाय्यम् ।
पश्वे तोकाय तनयाय जीवसे स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे । (ऋ १०-३५-१२)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१६१ महो अग्नेः समिधानस्य शर्मण्यनागा मित्रे वरुणे स्वस्तये ।
श्रेष्ठे स्याम सवितुः सवीमनि तद्देवानामवो अद्या वृणीमहे । (ऋ १०-३६-१२)

१६२ नावा न क्षोदः प्रदिशः पृथिव्याः स्वस्तिभिरति दुर्गाणि विश्वा ।
स्वां प्रजां बृहदुक्थो महित्वावरेष्वदधादा परेषु । (ऋ १०-५६-७)

१६३ असुनीते पुनरस्मासु चक्षुः पुनः प्राणमिह नो धेहि भोगम् ।
ज्योक् पश्येम सूर्यमुच्चरन्तमनुमते मृळया नः स्वस्ति । (ऋ १०-५९-६)

१६४ पुनर्नो असुं पृथिवी ददातु पुनर्द्यौर्देवी पुनरन्तरिक्षम् ।
पुनर्नः सोमस्तन्वं ददातु पुनः पूषा पथ्यां या स्वस्तिः । (ऋ १०-५९-७)

१६५ येभ्यो माता मधुमत् पिन्वते पयः पीयूषं द्यौरदितिरद्रिबर्हाः ।
उक्थशुष्मान् वृषभरान्त्स्वप्नसस्ताँ आदित्याँ अनु मदा स्वस्तये । (ऋ १०-६३-३)

१६६ नृचक्षसो अनिमिषन्तो अर्हणा बृहद्देवासो अमृतत्वमानशुः ।
ज्योतीरथा अहिमाया अनागसो दिवो वर्ष्माणं वसते स्वस्तये । (ऋ १०-६३-४)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१६७ सम्राजो ये सुवृधो यज्ञमाययुरपरिह्वृता दधिरे दिवि क्षयम् ।
ताँ आ विवास नमसा सुवृक्तिभिर्महो आदित्याँ अदितिं स्वस्तये । (ऋ १०-६३-५)

१६८ को वः स्तोमं राधति यं जुजोषथ विश्वे देवासो मनुषो यति ष्ठन ।
को वो ऽध्वरं तुविजाता अरं करद्यो नः पर्षदत्यंहः स्वस्तये । (ऋ १०-६३-६)

१६९ येभ्यो होत्रां प्रथमामायेजे मनुः समिद्धाग्निर्मनसा सप्त होतृभिः ।
त आदित्या अभयं शर्म यच्छत सुगा नः कर्त सुपथा स्वस्तये । (ऋ १०-६३-७)

१७० य ईशिरे भुवनस्य प्रचेतसो विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च मन्तवः ।
ते नः कृतादकृतादेनसस्पर्यद्या देवासः पिपृता स्वस्तये । (ऋ १०-६३-८)

१७१ भरेष्विन्द्रं सुहवं हवामहेऽंहोमुचं सुकृतं दैव्यं जनम् ।
अग्निं मित्रं वरुणं सातये भगं द्यावापृथिवी मरुतः स्वस्तये । (ऋ १०-६३-९)

१७२ सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहसं सुशर्माणमदितिं सुप्रणीतिम् ।
दैवीं नावं स्वरित्रामनागसमस्रवन्तीमा रुहेमा स्वस्तये । (ऋ १०-६३-१०)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१७३ विश्वे यजत्रा अधि वोचतोतये त्रायध्वं नो दुरेवाया अभिह्रुतः।
सत्यया वो देवहूत्या हुवेम शृण्वतो देवा अवसे स्वस्तये । (ऋ १०-६३-११)

१७४ अपामीवामप विश्वामनाहुतिमपारातिं दुर्विदत्रामघायतः ।
आरे देवा द्वेषो अस्मद्युयोतनोरु णः शर्म यच्छता स्वस्तये । (ऋ १०-६३-१२)

१७५ अरिष्टः स मर्तो विश्व एधते प्र प्रजाभिर्जायते धर्मणस्परि ।
यमादित्यासो नयथा सुनीतिभिरति विश्वानि दुरिता स्वस्तये । (ऋ १०-६३-१३)

१७६ यं देवासोऽवथ वाजसातौ यं शूरसाता मरुतो हिते धने ।
प्रातर्यावाणं रथमिन्द्र सानसिमरिष्यन्तमा रुहेमा स्वस्तये । (ऋ १०-६३-१४)

१७७ स्वस्ति नः पथ्यासु धन्वसु स्वस्त्यप्सु वृजने स्वर्वति ।
स्वस्ति नः पुत्रकृथेषु योनिषु स्वस्ति राये मरुतो दधातन । (ऋ १०-६३-१५)

१७८ स्वस्तिरिद्धि प्रपथे श्रेष्ठा रेक्णस्वत्यभि या वाममेति ।
सा नो अमा सो अरणे नि पातु स्वावेशा भवतु देवगोपा । (ऋ १०-६३-१६)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१७९ त्वष्टारं वायुमृभवो य ओहते दैव्या होतारा उषसं स्वस्तये ।
बृहस्पतिं वृत्रखादं सुमेधसमिन्द्रियं सोमं धनसा उ ईमहे । (ऋ १०-६५-१०)

१८० देवान् वसिष्ठो अमृतान् ववन्दे ये विश्वा भुवनाभि प्रतस्थुः ।
ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ १०-६५-१५)

१८१ देवान् हुवे बृहच्छ्रवसः स्वस्तये ज्योतिष्कृतो अध्वरस्य प्रचेतसः ।
ये वावृधुः प्रतरं विश्ववेदस इन्द्रज्येष्ठासो अमृता ऋतावृधः । (ऋ १०-६६-१)

१८२ वसिष्ठासः पितृवद्वाचमक्रत देवाँ ईळाना ऋषिवत् स्वस्तये ।
प्रीता इव ज्ञातयः काममेत्यास्मे देवासोऽव धूनुता वसु । (ऋ १०-६६-१४)

१८३ देवान् वसिष्ठो अमृतान् ववन्दे ये विश्वा भुवनाभि प्रतस्थुः ।
ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ १०-६६-१५)

१८४ एवा महो असुर वक्षथाय वम्रकः पड्भिरुप सर्पदिन्द्रम् ।
स इयानः करति स्वस्तिमस्मा इषमूर्जं सुक्षितिं विश्वमाभाः । (ऋ १०-९९-१२)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१८५ प्रीणीताश्वान् हित जयाथ स्वस्तिवाहं रथमित् कृणुध्वम् ।
द्रोणाहावमवतमश्मचक्रमंसत्रकोशं सिञ्चता नृपाणम् । (ऋ १०-१०१-७)

१८६ अस्य पिब क्षुमतः प्रस्थितस्येन्द्र सोमस्य वरमा सुतस्य ।
स्वस्तिदा मनसा मादयस्वार्वाचीनो रेवते सौभगाय । (ऋ १०-११६-२)

१८७ नि त्वा वसिष्ठा अह्वन्त वाजिनं गृणन्तो अग्ने विदथेषु वेधसः ।
रायस्पोषं यजमानेषु धारय यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ १०-१२२-८)

१८८ आदित्यासो अति स्रिधो वरुणो मित्रो अर्यमा ।
उग्रं मरुद्भी रुद्रं हुवेमेन्द्रमग्निं स्वस्तये ऽति द्विषः । (ऋ १०-१२६-५)

१८९ स्वस्तिदा विशस्पतिर्वृत्रहा विमृधो वशी ।
वृषेन्द्रः पुर एतु नः सोमपा अभयंकरः । (ऋ १०-१५२-२)

१९० त्यमू षु वाजिनं देवजूतं सहावानं तरुतारं रथानाम् ।
अरिष्टनेमिं पृतनाजमाशुं स्वस्तये तार्क्ष्यमिहा हुवेम । (ऋ १०-१७८-१)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९१ इन्द्रस्येव रातिमाजोहुवानाः स्वस्तये नावमिवा रुहेम ।
उर्वी न पृथ्वी बहुले गभीरे मा वामेतौ मा परेतौ रिषाम । (ऋ १०-१७८-२)

१९२ इन्धानास्त्वा शतं हिमा द्यु मन्तं समिधीमहि । वयस्वन्तो वयस्कृतं सहस्वन्तः सहस्कृतम् ।
अग्ने सपत्नदम्भनमदब्धासो अदाभ्यम् । चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय । (य ३-१८)

१९३ स नः पितेव सूनवे ऽग्ने सूपायनो भव । सचस्वा नः स्वस्तये । (य ३-२४)

१९४ अनु त्वा माता मन्यतामनु पितानु भ्राता सगर्भ्यो ऽनु सखा सयूथ्यः ।
सा देवि देवमच्छेहीन्द्राय सोमं रुद्रस्त्वा वर्तयतु स्वस्ति सोमसखा पुनरेहि । (य ४-२०)

१९५ प्रति पन्थामपद्महि स्वस्तिगामनेहसम् ।
येन विश्वाः परि द्विषो वृणक्ति विन्दते वसु । (य ४-२९)

१९६ उस्रावेतं धूर्षाहौ युज्येथामनश्रू अवीरहणौ ब्रह्मचोदनौ ।
स्वस्ति यजमानस्य गृहान् गच्छतम् । (य ४-३३)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९७ अंशुरंशुष्टे देव सोमाप्यायतामिन्द्रायैकधनविदे । आ तुभ्यमिन्द्रः प्यायतामा त्वमिन्द्राय प्यायस्व । आप्याययास्मान्त्सखीन्त्सन्या मेधया स्वस्ति ते देव सोम सुत्यामशीय । एष्टा रायः प्रेषे भगाय ऋतमृतवादिभ्यो नमो द्यावापृथिवीभ्याम् । (य ५-७)

१९८ समुद्रोऽसि विश्वव्यचा अजोऽस्येकपादहिरसि बुध्न्यो वागस्यैन्द्रमसि सदोऽस्यृतस्य द्वारौ मा मा सन्ताप्तमध्वनामध्वपते प्र मा तिर स्वस्ति मेऽस्मिन् पथि देवयाने भूयात् । (य ५-३३)

१९९ समिन्द्र णो मनसा नेषि गोभिः सं सूरिभिर्मघवन्त्सं स्वस्त्या ।
सं ब्रह्मणा देवकृतं यदस्ति सं देवानां सुमतौ यज्ञियानां स्वाहा । (य ८-१५)

२०० प्रतूर्वन्नेह्यवक्रामन्नशस्ती रुद्रस्य गाणपत्यं मयोभूरेहि ।
उर्वन्तरिक्षं वीहि स्वस्तिगव्यूतिरभयानि कृण्वन् पूष्णा सयुजा सह । (य ११-१५)

२०१ दृंहस्व देवि पृथिवि स्वस्तय आसुरी माया स्वधया कृतासि ।
जुष्टं देवेभ्य इदमस्तु हव्यमरिष्टा त्वमुदिहि यज्ञे अस्मिन् । (य ११-६९)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२०२ विश्वस्मै प्राणायापानाय व्यानायोदानाय प्रतिष्ठायै चरित्राय ।
अग्निष्ट्वाभि पातु मह्या स्वस्त्या छर्दिषा शन्तमेन तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवा सीद ।
(य १३-१९)

२०३ विश्वकर्मा त्वा सादयत्वन्तरिक्षस्य पृष्ठे व्यचस्वतीं प्रथस्वतीमन्तरिक्षं यच्छान्तरिक्षं
दृंहान्तरिक्षं मा हिंसीः । विश्वस्मै प्राणायापानाय व्यानायोदानया प्रतिष्ठायै चरित्राय ।
वायुष्ट्वाभिपातु मह्या स्वस्त्या छर्दिषा शन्तमेन तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवा सीद । (य १४-१२)

२०४ परमेष्ठी त्वा सादयतु दिवस्पृष्ठे व्यचस्वतीं प्रथस्वतीं दिवं यच्छ दिवं दृंह दिवं मा हिंसीः ।
विश्वस्मै प्राणायापानाय व्यानायोदानाय प्रतिष्ठायै चरित्राय ।
सूर्यस्त्वाभिपातु मह्या स्वस्त्या छर्दिषा शन्तमेन तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवे सीदतम् । (य १५-६४)

२०५ अग्ने प्रेहि प्रथमो देवयतां चक्षुर्देवानामुत मर्त्यानाम् ।
इयक्षमाणा भृगुभिः सजोषाः स्वर्यन्तु यजमानाः स्वस्ति । (य १७-६९)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२०६ इदं हविः प्रजननं मे अस्तु दशवीरं सर्वगणं स्वस्तये । आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि
लोकसन्यभयसनि । अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो अस्मासु धत्त । (य० १९-४८)

२०७ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं हवेहवे सुहवं शूरमिन्द्रम् ।
ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रं स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः । (य २०-५०)

२०८ एवेदिन्द्रं वृषणं वज्रबाहुं वसिष्ठासो अभ्यर्चन्त्यर्कैः ।
स न स्तुतो वीरवद्धातु गोमद्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (य २०-५४)

२०९ सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहसं सुशर्माणमदितिं सुप्रणीतिम् ।
दैवीं नावं स्वरित्रामनागसमस्रवन्तीमा रुहेमा स्वस्तये । (य २१-६)

२१० सुनावमा रुहेयमस्रवन्तीमनागसम् । शतारित्रां स्वस्तये । (य २१-७)

२११ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम् ।
पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये । (य २५-१८)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२१२ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु । (य २५-१९)

२१३ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरं सहस्रिणीभिरुप याहि यज्ञम् ।
वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (य २७-२८)

२१४ महो अग्नेः समिधानस्य शर्मण्यनागा मित्रे वरुणे स्वस्तये ।
श्रेष्ठे स्याम सवितुः सवीमनि तद्देवानामवो अद्या वृणीमहे । (य ३३-१७)

२१५ प्र वावृजे सुप्रया बर्हिरेषामा विश्पतीव वीरिट इयाते ।
विशामक्तोरुषसः पूर्वहूतौ वायुः पूषा स्वस्तये नियुत्वान् । (य ३३-४४)

२१६ अश्वावतीर्गोमतीर्न उषासो वीरवतीः सदमुच्छन्तु भद्राः ।
घृतं दुहाना विश्वतः प्रपीता यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (य ३४-४०)

२१७ अनड्वाहमन्वारभामहे सौरभेयं स्वस्तये ।
स न इन्द्र इव देवेभ्यो वह्निः सन्तारणो भव । (य ३५-१३)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२१८ इन्द्रा नु पूषणा वयं सख्याय स्वस्तये । हुवेम वाजसातये । (सा २०२)

२१९ इन्द्र त्रिधातु शरणं त्रिवरूथं स्वस्तये ।
छर्दिर्यच्छ मघवद्भ्यश्च मह्यं च यावया दिद्युमेभ्यः । (सा २६६)

२२० त्यमू षु वाजिनं देवजूतं सहोवानं तरुतारं रथानाम् ।
अरिष्टनेमिं पृतनाजमाशुं स्वस्तये तार्क्ष्यमिहा हुवेम । (सा ३३२)

२२१ ऋधक् सोम स्वस्तये संजग्मानो दिवा कवे । पवस्व सूर्यो दृशे । (सा ६५६)

२२२ एवा नः सोम परिषिच्यमान आ पवस्व पूयमानः स्वस्ति ।
इन्द्रमा विश बृहता मदेन वर्धया वाचं जनया पुरंधिम् । (सा ८६१)

२२३ पावमानीः स्वस्त्ययनीः सुदुघा हि घृतश्चुतः ।
ऋषिभिः संभृतो रसो ब्राह्मणेष्वमृतं हितम् । (सा १३००)

२२४ पावमानीः स्वस्त्ययनीस्ताभिर्गच्छति नान्दनम् ।
पुण्यांश्च भक्षान् भक्षयत्यमृतत्वं च गच्छति । (सा १३०३)

CC-0 In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२२५ त्वं वरुण उत मित्रो अग्ने त्वां वर्धन्ति मतिभिर्वसिष्ठाः ।
त्वे वसु सुषणनानि सन्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (सा १३०६)

२२६ सम्रु प्रियो मृज्यते सानो अव्ये यशस्तरो यशसां क्षैतो अस्मे ।
अभि स्वर धन्वा पूयमानो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (सा १४०१)

२२७ वषट् ते विष्णवास आ कृणोमि तन्मे जुषस्व शिपिविष्ट हव्यम् ।
वर्धन्तु त्वा सुष्टुतयो गिरो मे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (सा १६२७)

२२८ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः । स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः
स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु । स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु । (सा १८७५)

२२९ स्वस्तिदा विशां पतिर्वृत्रहा विमृधो वशी ।
वृषेन्द्रः पुर एतु नः सोमपा अभयंकरः । (अ १-२१-१)

२३० ये वो देवाः पितरो ये च पुत्राः सचेतसो मे शृणुतेदमुक्तम् ।
सर्वेभ्यो वः परि ददाम्येतं स्वस्त्येनं जरसे वहाथ । (अ १-३०-२)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

२३१ स्वस्ति मात्र उत पित्रे नो अस्तु स्वस्ति गोभ्यो जगते पुरुषेभ्यः ।
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
विश्वं सुभूतं सुविदत्रं नो अस्तु ज्योगेव दृशेम सूर्यम् । (अ १-३१-४)

२३२ परीदं वासो अधिथाः स्वस्तये ऽभूर्गृष्टीनामभिशस्तिपा उ ।
शतं च जीव शरदः पुरूची रायश्च पोषमुपसंव्ययस्व । (अ २-१३-३)

२३३ अदान्यान्त्सोमपान् मन्यमानो यज्ञस्य विद्वान्त्समये न धीरः ।
यदेनश्चकृवान् बद्ध एष तं विश्वकर्मन् प्र मुञ्चा स्वस्तये । (अ २-३५-३)

२३४ अश्वावतीर्गोमतीर्न उषासो वीरवतीः सदमुच्छन्तु भद्राः ।
घृतं दुहाना विश्वतः प्रपीता यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (अ ३-१६-७)

२३५ अग्ने प्रेहि प्रथमो देवतानां चक्षुर्देवानामुत मानुषाणाम् ।
इयक्षमाणा भृगुभिः सजोषाः स्वर्यन्तु यजमानाः स्वस्ति । (अ ४-१४-५)

२३६ स नः सिन्धुमिव नावाति पर्षा स्वस्तये ।
अप नः शोशुचदघम् । (अ ४-३३-८)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२३७ उत पुत्रः पितरं क्षत्रमीडे ज्येष्ठं मर्यादमह्वयन्त्स्वस्तये ।
दर्शन्नु ता वरुण यास्ते विष्ठा आवर्व्रततः कृणवो वपूंषि । (अ ५-१-८)

२३८ अस्मै ग्रामाय प्रदिशश्चतस्र ऊर्जं सुभूतं स्वस्ति सविता नः कृणोतु ।
अशत्र्विन्द्रो अभयं नः कृणोत्वन्यत्र राज्ञामभि यातु मन्युः । (अ ६-४०-२)

२३९ श्येनो ऽसि गायत्रच्छन्दा अनु त्वा रभे ।
स्वस्ति मा सं वहास्य यज्ञस्योदृचि स्वाहा । (अ ६-४८-१)

२४० ऋभुरसि जगच्छन्दा अनु त्वा रभे ।
स्वस्ति मा सं वहास्य यज्ञस्योदृचि स्वाहा । (अ ६-४८-२)

२४१ वृषासि त्रिष्टुप्छन्दा अनु त्वा रभे ।
स्वस्ति मा सं वहास्य यज्ञस्योदृचि स्वाहा । (अ ६-४८-३)

२४२ परि दद्म इन्द्रस्य बाहू समन्तं त्रातुस्त्रायतां नः ।
देव सवितः सोम राजन्त्सुमनसं मा कृणु स्वस्तये । (अ ६-९९-३)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२४३ एतं सधस्थाः परि वो ददामि यं शेवधिमावहाज्जातवेदाः ।
अन्वागन्ता यजमानः स्वस्ति तं स्म जानीत परमे व्योमन् । (अ ६-१२३-१)

२४४ जानीत स्मैनं परमे व्योमन् देवाः सधस्था विद लोकमत्र ।
अन्वागन्ता यजमानः स्वस्तीष्टापूर्तं स्म कृणुताविरस्मै । (अ ६-१२३-६)

२४५ सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहसं सुशर्माणमदितिं सुप्रणीतिम् ।
दैवीं नावं स्वरित्रामनागसो अस्रवन्तीमा रुहेमा स्वस्तये । (अ ७-६-३)

२४६ पूषेमा आशा अनु वेद सर्वाः सो अस्माँ अभयतमेन नेषत् ।
स्वस्तिदा आघृणिः सर्ववीरो ऽप्रयुच्छन् पुर एतु प्रजानन् । (अ ७-९-२)

२४७ वेदः स्वस्तिर्द्रुघणः स्वस्तिः परशुर्वेदिः परशुर्नः स्वस्ति ।
हविष्कृतो यज्ञिया यज्ञकामास्ते देवासो यज्ञमिमं जुषन्ताम् । (अ ७-२८-१)

२४८ मेमं प्राणो हासीन्मो अपानो ऽवहाय परा गात् ।
सप्तर्षिभ्य एनं परि ददामि त एनं स्वस्ति जरसे वहन्तु । (अ ७-५३-४)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२४९ त्यमू षु वाजिनं देवजूतं सहोवानं तरुतारं रथानाम् ।
अरिष्टनेमिं पृतनाजिमाशुं स्वस्तये तार्क्ष्यमिहा हुवेम । (अ ७-८५-१)

२५० त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं हवेहवे सुहवं शूरमिन्द्रम् ।
हुवे नु शक्रं पुरुहूतमिन्द्रं स्वस्ति न इन्द्रो मघवान् कृणोतु । (अ ७-८६-१)

२५१ समिन्द्र नो मनसा नेष गोभिः सं सूरिभिर्हरिवन्त्सं स्वस्त्या ।
सं ब्रह्मणा देवहितं यदस्ति सं देवानां सुमतौ यज्ञियानाम् । (अ ७-९७-२)

२५२ उदेनं भगो अग्रभीदुदेनं सोमो अंशुमान् ।
उदेनं मरुतो देवा उदिन्द्राग्नी स्वस्तये । (अ ८-१-२)

२५३ मा त्वा जम्भः संहनुर्मा तमो विदन्मा जिह्वा बर्हिः प्रमयुः कथा स्याः ।
उत् त्वादित्या वसवो भरन्तूदिन्द्राग्नी स्वस्तये । (अ ८-१-१६)

२५४ कृणोमि ते प्राणापानौ जरां मृत्युं दीर्घमायुः स्वस्ति ।
वैवस्वतेन प्रहितान् यमदूतांश्चरतो ऽप सेधामि सर्वान् । (अ ८-२-११)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२५५ स्वस्तिदा विशां पतिर्वृत्रहा विमृधो वशी । इन्द्रो बध्नातु ते मणिं जिगीवाँ अपराजितः
सोमपा अभयंकरो वृषा । स त्वा रक्षतु सर्वतो दिवा नक्तं च विश्वतः । (अ ८-५-२२)

२५६ एतमिध्मं समाहितं जुषाणो अग्ने प्रति हर्य होमैः । तस्मिन् विदेम सुमतिं स्वस्ति प्रजां
चक्षुः पशून्त्समिद्धे जातवेदसि ब्रह्मणा । (अ १०-६-३५)

२५७ नमस्ते घोषिणीभ्यो नमस्ते केशिनीभ्यः । नमो नमस्कृताभ्यो नमः संभुञ्जतीभ्यः ।
नमस्ते देव सेनाभ्यः स्वस्ति नो अभयं च नः । (अ ११-२-३१)

२५८ मा नः पश्चान्मा पुरस्तान्नुदिष्ठा मोत्तरादधरादुत ।
स्वस्ति भूमे नो भव मा विदन् परिपन्थिनो वरीयो यावया वधम् । (अ १२-१-३२)

२५९ समिन्धते संकसुकं स्वस्तये शुद्धा भवन्तः शुचयः पावकाः ।
जहाति रिप्रमत्येन एति समिद्धो अग्निः सुपुना पुनाति । (अ १२-२-११)

२६० मा त्वा दभन्परियान्तमाजिं स्वस्ति दुर्गाँ अति याहि शीभम् ।
दिवं च सूर्य पृथिवीं च देवीमहोरात्रे विमिमानो यदेषि । (अ १३-२-५)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२६१ स्वस्ति ते सूर्य चरसे रथाय येनोभावन्तौ परियासि सद्यः ।
यं ते वहन्ति हरितो वहिष्ठाः शतमश्वा यदि वा सप्त बह्वीः । (अ १३-२-६)

२६२ एमं पन्थामरुक्षाम सुगं स्वस्तिवाहनम् ।
यस्मिन् वीरो न रिष्यत्यन्येषां विदन्ते वसु । (अ १४-२-८)

२६३ स्वस्त्यद्योषसो दोषसश्च सर्व आपः सर्वगणो अशीय । (अ १६-४-६)

२६४ त्वं न इन्द्रोतिभिः शिवाभिः शंतमो भव ।
आरोहंस्त्रिदिवं दिवो गृणानः सोमपीतये प्रियधामा स्वस्तये तवेद्विष्णो बहुधा वीर्याणि ।
त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमन् । (अ १७-१-१०)

२६५ आदित्य नावमारुक्षः शतारित्रां स्वस्तये ।
अहर्मात्यपीपरो रात्रिं सत्राति पारय । (अ १७-१-२५)

२६६ सूर्य नावमारुक्षः शतारित्रां स्वस्तये ।
रात्रिं मात्यपीपरोऽहः सत्राति पारय । (अ १७-१-२६)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२६७ यौ ते श्वानौ यम रक्षितारौ चतुरक्षौ पथिषदी नृचक्षसा ।
ताभ्यां राजन् परि धेह्येनं स्वस्त्यस्मा अनमीवं च धेहि । (अ १८-२-१२)

२६८ कोशं दुहन्ति कलशं चतुर्बिलमिडां धेनु मधुमतीं स्वस्तये ।
ऊर्जं मदन्तीमदितिं जनेष्वग्ने मा हिंसीः परमे व्योमन् । (अ १८-४-३०)

२६९ स्वस्तितं मे सुप्रातः सुसायं सुदिवं सुमृगं सुशकुनं मे अस्तु ।
सुहवमग्ने स्वस्त्यमर्त्यं गत्वा पुनरायाभिनन्दन् । (अ १९-८-३)

२७० स्वस्ति नो अस्त्वभयं नो अस्तु नमो ऽहोरात्राभ्यामस्तु । (अ १९-८-७)

२७१ ब्रह्म प्रजापतिर्धाता लोका वेदाः सप्तऋषयो ऽग्नयः । तैर्मे कृतं स्वस्त्ययनमिन्द्रो मे शर्म यच्छतु ब्रह्मा मे शर्म यच्छतु । विश्वे मे देवाः शर्म यच्छन्तु सर्वे मे देवाः शर्म यच्छन्तु ।
(अ १९-९-१२)

२७२ ये देवानामृत्विजो यज्ञियासो मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः ।
ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (अ १९-११-५)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२७३ उरुं नो लोकमनु नेषि विद्वान्स्वर्यज्ज्योतिरभयं स्वस्ति ।
उग्रा त इन्द्र स्थविरस्य बाहू उप क्षयेम शरणा बृहन्ता । (अ १९-१५-४)

२७४ परीदं वासो अधिथाः स्वस्तये ऽभूर्वापीनामभिशस्तिपा उ ।
शतं च जीव शरदः पुरूचीर्वसूनि चारुर्वि भजासि जीवन् । (अ १९-२४-६)

२७५ अग्निर्माग्निनावतु प्राणायापानायायुषे वर्चस ओजसे तेजसे स्वस्तये सुभूतये स्वाहा ।
(अ १९-४५-६)

२७६ इन्द्रो मेन्द्रियेणावतु प्राणायापानायायुषे वर्चस ओजसे तेजसे स्वस्तये सुभूतये स्वाहा ।
(अ १९-४५-७)

२७७ सोमो मा सौम्येनावतु प्राणायापानायायुषे वर्चस ओजसे तेजसे स्वस्तये सुभूतये स्वाहा ।
(अ १९-४५-८)

२७८ भगो मा भगेनावतु प्राणायापानायायुषे वर्चस ओजसे तेजसे स्वस्तये सुभूतये स्वाहा ।
(अ १९-४५-९)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

२७९ मरुतो मा गणैरवन्तु प्राणायापानायायुषे वर्चस ओजसे तेजसे स्वस्तये सुभूतये स्वाहा ।
(अ १९-४५-१०)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२८० एवेदिन्द्रं वृषणं वज्रबाहुं वसिष्ठासो अभ्यर्चन्त्यर्कैः ।
स न स्तुतो वीरवद्धातु गोमद् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (अ २०-१२-६)

२८१ बृहस्पते युवमिन्द्रश्च वस्वो दिव्यस्येशाथे उत पार्थिवस्य ।
धत्तं रयिं स्तुवते कीरये चिद् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (अ २०-१७-१२)

२८२ आ संयतमिन्द्र णः स्वस्तिं शत्रुतूर्याय बृहतीममृध्राम् ।
यया दासान्यार्याणि वृत्रा करो वज्रिन्त्सुतुका नाहुषाणि । (अ २०-३६-१०)

२८३ नू इन्द्र शूर स्तवमान ऊती ब्रह्मजूतस्तन्वा वावृधस्व ।
उप नो वाजान् मिमीह्युप स्तीन् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (अ २०-३७-११)

२८४ स नः पप्रिः पारयाति स्वस्ति नावा पुरुहूतः ।
इन्द्रो विश्वा अति द्विषः । (अ २०-४६-२)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२८५ इन्द्र त्रिधातु शरणं त्रिवरूथं स्वस्तिमत् ।
छर्दिर्यच्छ मघवद्भ्यश्च मह्यं च यावया दिद्युमेभ्यः । (अ २०-८३-१)

२८६ बृहस्पते युवमिन्द्रश्च वस्वो दिव्यस्येशाथे उत पार्थिवस्य ।
धत्तं रयिं स्तुवते कीरये चिद् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (अ २०-८७-७)

२८७ आ तू सुशिप्र दंपते रथं तिष्ठा हिरण्ययम् ।
अध द्युक्षं सचेवहि सहस्रपादमरुषं स्वस्तिगामनेहसम् । (अ २०-९२-१३)

भूर्भुवः स्वः । तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् । (य ३६-३)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शमाहुतयः

१ आ त्वा विशन्त्वाशवः सोमास इन्द्र गिर्वणः । शं ते सन्तु प्रचेतसे । (ऋ १-५-७)

२ गाथपतिं मेधपतिं रुद्रं जलाषभेषजम् । तच्छंयोः सुम्नमीमहे । (ऋ १-४३-४)

३ शं नः करत्यर्वते सुगं मेषाय मेष्ये । नृभ्यो नारिभ्यो गवे । (ऋ १-४३-६)

४ शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा ।
शं न इन्द्रो बृहस्पतिः शं नो विष्णुरुरुक्रमः । (ऋ १-९०-९)

५ अग्नीषोमा हविषः प्रस्थितस्य वीतं हर्यतं वृषणा जुषेथाम् ।
सुशर्माणा स्ववसा हि भूतमथा धत्तं यजमानाय शं योः । (ऋ १-९३-७)

६ बृहस्पते सदमिन्नः सुगं कृधि शं योर्यत्ते मनुर्हितं तदीमहे ।
रथं न दुर्गाद्वसवः सुदानवो विश्वस्मान्नो अंहसो निष्पिपर्तन । (ऋ १-१०६-५)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७ इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्र भरामहे मतीः ।
यथा शमसद् द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम् । (ऋ १-११४-१)

८ मृळा नो रुद्रोत नो मयस्कृधि क्षयद्वीराय नमसा विधेम ते ।
यच्छं च योश्च मनुरायेजे पिता तदश्याम तव रुद्र प्रणीतिषु । (ऋ १-११४-२)

९ अर्वाङ् त्रिचक्रो मधुवाहनो रथो जीराश्वो अश्विनोर्यातु सुष्टुतः ।
त्रिवन्धुरो मघवा विश्वसौभगः शं न आ वक्षद् द्विपदे चतुष्पदे । (ऋ १-१५७-३)

१० ब्रह्माणि मे मतयः शं सुतासः शुष्म इयर्ति प्रभृतो मे अद्रिः ।
आ शासते प्रति हर्यन्त्युक्थेमा हरी वहतस्ता नो अच्छ । (ऋ १-१६५-४)

११ एवा हि ते शं सवना समुद्र आपो यत् त आसु मदन्ति देवीः ।
विश्वा ते अनु जोष्या भूद् गौः सूरींश्चिद्यदि धिषा वेषि जनान् । (ऋ १-१७३-८)

१२ अग्ने त्वं पारया नव्यो अस्मान्त्स्वस्तिभिरति दुर्गाणि विश्वा ।
पूश्च पृथ्वी बहुला न उर्वी भवा तोकाय तनयाय शं योः । (ऋ १-१८९-२)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१३ या वो भेषजा मरुतः शुचीनि या शंतमा वृषणो या मयोभु ।
यानि मनुरवृणीता पिता नस्ता शं च योश्च रुद्रस्य वश्मि । (ऋ २-३३-१३)

१४ अस्मभ्यं तद्दिवो अद्भ्यः पृथिव्यास्त्वया दत्तं काम्यं राध आ गात् ।
शं यत् स्तोतृभ्य आपये भवात्युरुशंसाय सवितर्जरित्रे । (ऋ २-३८-११)

१५ उत नो ब्रह्मन्नविष उक्थेषु देवहूतमः ।
शं नः शोचा मरुद्वृधो ऽग्ने सहस्रसातमः । (ऋ ३-१३-६)

१६ त्रीण्यायूंषि तव जातवेदस्तिस्र आजानीरुषसस्ते अग्ने ।
ताभिर्देवानामवो यक्षि विद्वानथा भव यजमानाय शं योः । (ऋ ३-१७-३)

१७ उच्छोचिषा सहसस्पुत्र स्तुतो बृहद्वयः शशमानेषु धेहि ।
रेवदग्ने विश्वामित्रेषु शं योर्मर्मृज्मा ते तन्वं भूरि कृत्वः । (ऋ ३-१८-४)

१८ सखे सखायमभ्या ववृत्स्वाशुं न चक्रं रथ्येव रंह्यास्मभ्यं दस्म रंह्या । अग्ने मृळीकं वरुणे
सचा विदो मरुत्सु विश्वभानुषु । तोकाय तुजे शुशुचान शं कृध्यस्मभ्यं दस्म शं कृधि ।
(ऋ ४-१-३)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९ महश्चिदग्न एनसो अभीक ऊर्वाद्देवानामुत मर्त्यानाम् ।
मा ते सखायः सदमिद्रिषाम यच्छा तोकाय तनयाय शं योः । (ऋ ४-१२-५)

२० आ यस्ते सर्पिरासुते ऽग्ने शमस्ति धायसे ।
एषु द्युम्नमुत श्रव आ चित्तं मर्त्येषु धाः । (ऋ ५-७-९)

२१ तुभ्येदमग्ने मधुमत्तमं वचस्तुभ्यं मनीषा इयमस्तु शं हृदे ।
त्वां गिरः सिन्धुमिवावनीर्महीरा पृणन्ति शवसा वर्धयन्ति च । (ऋ ५-११-५)

२२ तदस्तु मित्रावरुणा तदग्ने शं योरस्मभ्यमिदमस्तु शस्तम् ।
अशीमहि गाधमुत प्रतिष्ठां नमो दिवे बृहते सादनाय । (ऋ ५-४७-७)

२३ एष ते देव नेता रथस्पतिः शं रयिः ।
शं राये शं स्वस्तय इषःस्तुतो मनामहे देवस्तुतो मनामहे । (ऋ ५-५०-५)

२४ अतीयाम निदस्तिरः स्वस्तिभिर्हित्वावद्यमरातीः ।
वृष्ट्वी शं योराप उस्रि भेषजं स्याम मरुतः सह । (ऋ ५-५३-१४)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२५ प्रातर्देवीमदितिं जोहवीमि मध्यंदिन उदिता सूर्यस्य ।
राये मित्रावरुणा सर्वतातेळे तोकाय तनयाय शं योः । (ऋ ५-६९-३)

२६ शमू षु वां मधूयुवा ऽस्माकमस्तु चर्कृतिः ।
अर्वाचीना विचेतसा विभिः श्येनेव दीयतम् । (ऋ ५-७४-९)

२७ यस्ता चकार स कुह स्विदिन्द्रः कमा जनं चरति कासु विक्षु ।
कस्ते यज्ञो मनसे शं वराय को अर्क इन्द्र कतमः स होता । (ऋ ६-२१-४)

२८ न यं हिंसन्ति धीतयो न वाणीरिन्द्रं नक्षन्तीदभि वर्धयन्तीः ।
यदि स्तोतारः शतं यत् सहस्रं गृणन्ति गिर्वणसं शं तदस्मै । (ऋ ६-३४-३)

२९ तद्वो गाय सुते सचा पुरुहूताय सत्वने ।
शं यद् गवे न शाकिने । (ऋ ६-४५-२२)

३० ओमानमापो मानुषीरमृक्तं धात तोकाय तनयाय शं योः ।
यूयं हि ष्ठा भिषजो मातृतमा विश्वस्य स्थातुर्जगतो जनित्रीः । (ऋ ६-५०-७)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

३१ सोमारुद्रा धारयेथामसुर्यं प्र वामिष्टयो ऽरमश्नुवन्तु ।
दमेदमे सप्त रत्ना दधाना शं नो भूतं द्विपदे शं चतुष्पदे । (ऋ ६-७४-१)
३२ कविं केतुं धासिं भानुमद्रेर्हिन्वन्ति शं राज्यं रोदस्योः ।
पुरंदरस्य गीर्भिरा विवासे ऽग्नेर्व्रतानि पूर्व्या महानि । (ऋ ७-६-२)
३३ शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या ।
शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ । (ऋ ७-३५-१)
३४ शं नो भगः शमु नः शंसो अस्तु शं नः पुरंधिः शमु सन्तु रायः ।
शं नः सत्यस्य सुयमस्य शंसः शं नो अर्यमा पुरुजातो अस्तु । (ऋ ७-३५-२)
३५ शं नो धाता शमु धर्ता नो अस्तु शं न उरूची भवतु स्वधाभिः ।
शं रोदसी बृहती शं नो अद्रिः शं नो देवानां सुहवानि सन्तु । (ऋ ७-३५-३)
३६ शं नो अग्निर्ज्योतिरनीको अस्तु शं नो मित्रावरुणावश्विना शम् ।
शं नः सुकृतां सुकृतानि सन्तु शं न इषिरो अभि वातु वातः । (ऋ ७-३५-४)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0 In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

३७ शं नो द्यावापृथिवी पूर्वहूतौ शमन्तरिक्षं दृशये नो अस्तु ।
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
शं न ओषधीर्वनिनो भवन्तु शं नो रजसस्पतिरस्तु जिष्णुः । (ऋ ७-३५-५)

३८ शं न इन्द्रो वसुभिर्देवो अस्तु शमादित्येभिर्वरुणः सुशंसः ।
शं नो रुद्रो रुद्रेभिर्जलाषः शं नस्त्वष्टा ग्नाभिरिह शृणोतु । (ऋ ७-३५-६)

३९ शं नः सोमो भवतु ब्रह्म शं नः शं नो ग्रावाणः शमु सन्तु यज्ञाः ।
शं नः स्वरूणां मितयो भवन्तु शं नः प्रस्वः शम्वस्तु वेदिः । (ऋ ७-३५-७)

४० शं नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु शं नश्चतस्रः प्रदिशो भवन्तु ।
शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शं नः सिन्धवः शमु सन्त्वापः । (ऋ ७-३५-८)

४१ शं नो अदितिर्भवतु व्रतेभिः शं नो भवन्तु मरुतः स्वर्काः ।
शं नो विष्णुः शमु पूषा नो अस्तु शं नो भवित्रं शम्वस्तु वायुः । (ऋ ७-३५ ९)

४२ शं नो देवः सविता त्रायमाणः शं नो भवन्तूषसो विभातीः ।
शं नः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः शं नः क्षेत्रस्य पतिरस्तु शंभुः । (ऋ ७-३५-१०)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४३ शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु शं सरस्वती सह धीभिरस्तु ।
शमभिषाचः शमु रातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवाः शं नो अप्याः । (ऋ ७-३५-११)

४४ शं नः सत्यस्य पतयो भवन्तु शं नो अर्वन्तः शमु सन्तु गावः ।
शं न ऋभवः सुकृतः सुहस्ताः शं नो भवन्तु पितरो हवेषु । (ऋ ७-३५-१२)

४५ शं नो अज एकपाद्देवो अस्तु शं नोऽहिर्बुध्न्यः शं समुद्रः ।
शं नो अपां नपात् पेरुरस्तु शं नः पृश्निर्भवतु देवगोपा । (ऋ ७-३५-१३)

४६ शं नो भवन्तु वाजिनो हवेषु देवताता मितद्रवः स्वर्काः ।
जम्भयन्तोऽहिं वृकं रक्षांसि सनेम्यस्मद्युयवन्नमीवाः । (ऋ ७-३८-७)

४७ आदित्यानामवसा नूतनेन सक्षीमहि शर्मणा शंतमेन ।
अनागास्त्वे अदितित्वे तुरास इमं यज्ञं दधतु श्रोषमाणाः । (ऋ ७-५१-१)

४८ वास्तोष्पते प्रति जानीह्यस्मान्त्स्वावेशो अनमीवो भवा नः ।
यत् त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे । (ऋ ७-५४-१)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

४९ यो ह स्य वां रथिरा वस्त उस्रा रथो युजानः परियाति वर्तिः ।
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
तेन नः शं योरुषसो व्युष्टौ न्यश्विना वहतं यज्ञे अस्मिन् । (ऋ ७-६९-५)

५० अयं सु तुभ्यं वरुण स्वधावो हृदि स्तोम उपश्रितश्चिदस्तु ।
शं नः क्षेमे शमु योगे नो अस्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । (ऋ ७-८६-८)

५१ तेन नो वाजिनीवसू पश्वे तोकाय शं गवे । वहतं पीवरीरिषः । (ऋ ८-५-२०)

५२ तूतुजानो महेमते ऽश्वेभिः प्रुषितप्सुभिः ।
आ याहि यज्ञमाशुभिः शमिद्धि ते । (ऋ ८-१३-११)

५३ स्वदुष्टे अस्तु संसुदे मधुमान् तन्वे तव । सोमः शमस्तु ते हृदे । (ऋ ८-१७-६)

५४ उत त्या दैव्या भिषजा शं नः करतो अश्विना ।
युयुयातामितो रपो अप स्रिधः । (ऋ ८-१८-८)

५५ शमग्निरग्निभिः करच्छं नस्तपतु सूर्यः ।
शं वातो वात्वरपा अप स्रिधः । (ऋ ८-१८-९)

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५६ तत्तदग्निर्वयो दधे यथायथा कृपण्यति ।
ऊर्जाहुतिर्वसूनां शं च योश्च मयो दधे विश्वस्यै देवहूत्यै नभन्तामन्यके समे ।
(ऋ ८-३९-४)

५७ शं नो भव हृद आ पीत इन्दो पितेव सोम सूनवे सुशेवः ।
सखेव सख्य उरुशंस धीरः प्र ण आयुर्जीवसे सोम तारीः । (ऋ ८-४८-४)

५८ अग्निं द्वेषो योतवै नो गृणीमस्यग्निं शं योश्च दातवे ।
विश्वासु विक्ष्ववितेव हव्यो भुवद्वस्तुर्ऋषूणाम् । (ऋ ८-७१-१५)

५९ सुशेवो नो मृळयाकुरदृप्तक्रतुरवातः । भवा नः सोम शं हृदे । (ऋ ८-७९-७)

६० इषा मन्दस्वादु तेऽरं वराय मन्यवे । भुवत् त इन्द्र शं हृदे । (ऋ ८-८२-३)

६१ स नः पवस्व शं गवे शं जनाय शमर्वते । शं राजन्नोषधीभ्यः । (ऋ ९-११-३)

६२ अमित्रहा विचर्षणिः पवस्व सोम शं गवे । देवेभ्यो अनुकामकृत् । (ऋ ९-११-७)

६३ इन्द्रस्य सोम राधसे शं पवस्व विचर्षणे । प्रजावद्रेत आ भर । (ऋ ९ ६०-४)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६४ अर्षा णः सोम शं गवे धुक्षस्व पिप्युषीमिषम् ।
वर्धा समुद्रमुक्थ्यम् । (ऋ ९-६१-१५)

६५ सिन्धोरिव प्रवणे निम्न आशवो वृषच्युता मदासो गातुमाशत ।
शं नो निवेशे द्विपदे चतुष्पदेऽस्मे वाजाः सोम तिष्ठन्तु कृष्टयः । (ऋ ९-६९-७)

६६ एवा पुनानो अपः स्वर्गा अस्मभ्यं तोका तनयानि भूरि ।
शं नः क्षेत्रमुरु ज्योतींषि सोम ज्योङ् नः सूर्यं दृशये रिरीहि । (ऋ ९-९१-६)

६७ शुक्रः पवस्व देवेभ्यः सोम दिवे पृथिव्यै शं च प्रजायै । (ऋ ९-१०९-५)

६८ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शं योरभि स्रवन्तु नः । (ऋ १०-९-४)

६९ बर्हिषदः पितर ऊत्यर्वागिमा वो हव्या चकृमा जुषध्वम् ।
त आ गतावसा शंतमेनाथा नः शं योररपो दधात । (ऋ १०-१५-४)

७० शं नो भव चक्षसा शं नो अह्ना शं भानुना शं हिमा शं घृणेन ।
यथा शमध्वञ्छमसद् दुरोणे तत् सूर्य द्रविणं धेहि चित्रम् । (ऋ १०-३७-१०)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७१ अस्माकं देवा उभयाय जन्मने शर्म यच्छत द्विपदे चतुष्पदे ।
अदत् पिबदूर्जयमानमाशितं तदस्मे शं योररपो दधातन । (ऋ १०-३७-११)

७२ शं रोदसी सुबन्धवे यह्वी ऋतस्य मातरा ।
भरतामप यद्रपो द्यौः पृथिवि क्षमा रपो मो षु ते किं चनाममत् । (ऋ १०-५९-८)

७३ वृषभो न तिग्मशृङ्गो ऽन्तर्यूथेषु रोरुवत् ।
मन्थस्त इन्द्र शं हृदे यं ते सुनोति भावयुर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः । (ऋ १०-८६-१५)

७४ या ओषधीः सोमराज्ञीर्वह्वीः शतविचक्षणाः ।
तासां त्वमस्युत्तमारं कामाय शं हृदे । (ऋ १०-९७-१८)

७५ देवाः कपोत इषितो यदिच्छन् दूतो निर्ऋत्या इदमाजगाम ।
तस्मा अर्चाम कृणवाम निष्कृतिं शं नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे । (ऋ १०-१६५-१)

७६ हेतिः पक्षिणी न दभात्यस्मानाष्ट्र्यां पदं कृणुते अग्निधाने ।
शं नो गोभ्यश्च पुरुषेभ्यश्चास्तु मा नो हिंसीदिह देवाः कपोतः । (ऋ १०-१६५-३)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७७ बृहस्पतिर्नयतु दुर्गहा तिरः पुनर्नेषदघशंसाय मन्म ।
क्षिपदशस्तिमप दुर्मतिं हन्नथा करद्यजमानाय शं योः । (ऋ १०-१८२-१)

७८ उपहूता इह गाव उपहूता अजावयः ।
अथो अन्नस्य कीलाल उपहूतो गृहेषु नः । क्षेमाय वः शान्त्यै प्रपद्ये शिवं शग्मं शंयोः शंयोः ।
(य ३-४३)

७९ एदमगन्म देवयजनं पृथिव्या यत्र देवासो अजुषन्त विश्वे ।
ऋक्सामाभ्यां सन्तरन्तो यजुर्भी रायस्पोषेण समिषा मदेम ।
इमा आपः शमु मे सन्तु देवीरोषधे त्रायस्व स्वधिते मैनं हिंसीः । (य ४-१)

८० देवीराप एष वो गर्भस्तं सुप्रीतं सुभृतं बिभृत ।
देव सोमैष ते लोकस्तस्मिञ्छं च वक्ष्व परि च वक्ष्व । (य ८-२६)

८१ शं नो भवन्तु वाजिनो हवेषु देवताता मितद्रवः स्वर्काः ।
जम्भयन्तोऽहिं वृकं रक्षांसि सनेम्यस्मद्युयवन्नमीवाः । (य ९-१६)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८२ या ओषधीः सोमराज्ञीर्बह्वीः शतविचक्षणाः ।
तासामसि त्वमुत्तमारं कामाय शं हृदे । (य १२-९२)

८३ इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीः ।
यथा शमसद् द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम् । (य १६-४८)

८४ शं च मे मयश्च मे प्रियं च मे ऽनुकामश्च मे कामश्च मे सौमनसश्च मे भगश्च मे द्रविणं च मे भद्रं च मे श्रेयश्च मे वसीयश्च मे यशश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् । (य १८-८)

८५ बर्हिषदः पितर ऊत्यर्वागिमा वो हव्या चकृमा जुषध्वम् ।
त आ गतावसा शन्तमेनाथा नः शं योररपो दधात । (य १९-५५)

८६ शं नो भवन्तु वाजिनो हवेषु देवताता मितद्रवः स्वर्काः ।
जम्भयन्तो ऽहिं वृकं रक्षांसि सनेम्यस्मद्युयवन्नमीवाः । (य २१-१०)

८७ शं ते परेभ्यो गात्रेभ्यः शमस्त्ववरेभ्यः ।
शमस्थभ्यो मज्जभ्यः शम्वस्तु तन्वै तव । (य २३-४४)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८८ ब्रह्माणि मे मतयः शं सुतासः शुष्म इयर्ति प्रभृतो मे अद्रिः ।
आ शासते प्रति हर्यन्त्युक्थेमा हरी वहतस्ता नो अच्छ । (य ३३-७८)

८९ अन्विदनुमते त्वं मन्यासै शं च नस्कृधि ।
क्रत्वे दक्षाय नो हिनु प्र ण आयूंषि तारिषः । (य ३४-८)

९० सविता ते शरीराणि मातुरुपस्थ आ वपतु । तस्मै पृथिवि शं भव । (य ३५-५)

९१ शं वातः शं हि ते घृणिः शं ते भवन्त्विष्टकाः ।
शं ते भवन्त्वग्नयः पार्थिवासो मा त्वाभि शूशुचन् । (य ३५-८)

९२ यन्मे छिद्रं चक्षुषो हृदयस्य मनसो वातितृण्णं बृहस्पतिर्मे तद्दधातु ।
शं नो भवतु भुवनस्य यस्पतिः । (य ३६-२)

९३ इन्द्रो विश्वस्य राजति । शं नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे । (य ३६-८)

९४ शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा ।
शं न इन्द्रो बृहस्पतिः शं नो विष्णुरुरुक्रमः । (य ३६-९)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

९५ शं नो वातः पवतां शं नस्तपतु सूर्यः ।
शं नः कनिक्रदद्देवः पर्जन्यो अभि वर्षतु । (य ३६-१०)

९६ अहानि शं भवन्तु नः शं रात्रीः प्रति धीयताम् । शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या । शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः ।
(य ३६-११)

९७ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शं योरभि स्रवन्तु नः । (य ३६-१२)

९८ यतोयतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु ।
शं नः कुरु प्रजाभ्यो ऽभयं नः पशुभ्यः । (य ३६-२२)

९९ दिवि धा इमं यज्ञमिमं यज्ञं दिवि धाः ।
स्वाहाग्नये यज्ञियाय शं यजुर्भ्यः । (य ३८-११)

१०० शं नो देवीरभिष्टये शं नो भवन्तु पीतये । शं योरभि स्रवन्तु नः । (सा ३३)

१०१ तद्वो गाय सुते सचा पुरुहूताय सत्वने । शं यद् गवे न शाकिने । (सा ११५)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

१०२ शं पदं मघं रयीषिणे न काममव्रतो हिनोति न स्पृशद्रयिम् । (सा ४४१)
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१०३ स नः पवस्व शं गवे शं जनाय शमर्वते । शं राजन्नोषधीभ्यः । (सा ६५३)

१०४ शुक्रः पवस्व देवेभ्यः सोम दिवे पृथिव्यै शं च प्रजाभ्यः । (सा १२४२)

१०५ अर्षा नः सोम शं गवे धुक्षस्व पिप्युषीमिषम् । वर्धा समुद्रमुक्थ्य । (सा १३३७)

१०६ अमित्रहा विचर्षणिः पवस्व सोम शं गवे । देवेभ्यो अनुकामकृत् । (सा १४४७)

१०७ तद्वो गाय सुते सचा पुरुहूताय सत्वने । शं यद् गवे न शाकिने । (सा १६६६)

१०८ अर्वाङ् त्रिचक्रो मधुवाहनो रथो जीराश्वो अश्विनोर्यातु सुष्टुतः ।
त्रिवन्धुरो मघवा विश्वसौभगः शं न आ वक्षद् द्विपदे चतुष्पदे । (सा १७६०)

१०९ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शं योरभि स्रवन्तु नः । (अ १-६-१)

११० शं न आपो धन्वन्याः शमु सन्त्वनूप्याः ।
शं नः खनित्रिमा आपः शमु याः कुम्भ आभृताः शिवा नः सन्तु वार्षिकीः । (अ १-६-४)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१११ शं मे परस्मै गात्राय शमस्त्ववराय मे ।
शं मे चतुर्भ्यो अङ्गेभ्यः शमस्तु तन्वे मम । (अ १-१२-४)

११२ हिरण्यवर्णाः शुचयः पावका यासु जातः सविता यास्वग्निः ।
या अग्निं गर्भं दधिरे सुवर्णास्ता न आपः शं स्योना भवन्तु । (अ १-३३-१)

११३ यासां राजा वरुणो याति मध्ये सत्यानृते अवपश्यन् जनानाम् ।
या अग्निं गर्भं दधिरे सुवर्णास्ता न आपः शं स्योना भवन्तु । (अ १-३३-२)

११४ यासां देवा दिवि कृण्वन्ति भक्षं या अन्तरिक्षे बहुधा भवन्ति ।
या अग्निं गर्भं दधिरे सुवर्णास्ता न आपः शं स्योना भवन्तु । (अ १-३३-३)

११५ शिवेन मा चक्षुषा पश्यतापः शिवया तन्वोप स्पृशत त्वचं मे ।
घृतश्चुतः शुचयो याः पावकास्ता न आपः शं स्योना भवन्तु । (अ १-३३-४)

११६ शं नो भवन्त्वप ओषधयः शिवाः ।
इन्द्रस्य वज्रो अप हन्तु रक्षस आराद्विसृष्टा इषवः पतन्तु रक्षसाम् । (अ २-३-६)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

११७ शं ते अग्निः सहाद्भिरस्तु शं सोमः सहौषधीभिः ।
एवाहं त्वां क्षेत्रियान्निर्ऋत्या जामिशंसाद् द्रुहो मुञ्चामि वरुणस्य पाशात् ।
अनागसं ब्रह्मणा त्वा कृणोमि शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम् । (अ २-१०-२)

११८ शं ते वातो अन्तरिक्षे वयो धाच्छं ते भवन्तु प्रदिशश्चतस्रः ।
एवाहं त्वां क्षेत्रियान्निर्ऋत्या जामिशंसाद् द्रुहो मुञ्चामि वरुणस्य पाशात् ।
अनागसं ब्रह्मणा त्वा कृणोमि शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम् । (अ २-१०-३)

११९ शं नो देवी पृश्निपर्ण्यशं निर्ऋत्या अकः ।
उग्रा हि कण्वजम्भनी तामभक्षि सहस्वतीम् । (अ २-२५-१)

१२० मध्वा पृञ्चे नद्यः पर्वता गिरयो मधु ।
मधु परुष्णी शीपाला शमास्ने अस्तु शं हृदे । (अ ६-१२-३)

१२१ देवस्य सवितुः सवे कर्म कृण्वन्तु मानुषाः ।
शं नो भवन्त्वप ओषधीः शिवाः । (अ ६-२३-३)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१२२ शं च नो मयश्च नो मा च नः किं चनाममत् ।
क्षमा रपो विश्वं नो अस्तु भेषजं सर्वं नो अस्तु भेषजम् । (अ ६-५७-३)

१२३ अन्विदनुमते त्वं मंससे शं च नस्कृधि ।
जुषस्व हव्यमाहुतं प्रजां देवि ररास्व नः । (अ ७-२०-२)

१२४ शं नो वातो वातु शं नस्तपतु सूर्यः ।
अहानि शं भवन्तु नः शं रात्री प्रति धीयतां शमुषा नो व्युच्छतु । (अ ७-६९-१)

१२५ तुभ्यं वातः पवतां मातरिश्वा तुभ्यं वर्षन्त्वमृतान्यापः ।
सूर्यस्ते तन्वे शं तपाति त्वां मृत्युर्दयतां मा प्र मेष्ठाः । (अ ८-१-५)

१२६ शिवे ते स्तां द्यावापृथिवी असंतापे अभिश्रियौ । शं ते सूर्य आ तपतु शं वातो वातु ते हृदे ।
शिवा अभि क्षरन्तु त्वापो दिव्याः पयस्वतीः । (अ ८-२-१४)

१२७ या रोहन्त्याङ्गिरसीः पर्वतेषु समेषु च ।
ता नः पयस्वतीः शिवा ओषधीः सन्तु शं हृदे । (अ ८-७-१७)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१२८ शं त आपो हैमवतीः शमु ते सन्तूत्स्याः ।
शं ते सनिष्यदा आपः शमु ते सन्तु वर्ष्याः । (अ १९-२-१)

१२९ शं त आपो धन्वन्याः शं ते सन्त्वनूप्याः ।
शं ते खनित्रिमा आपः शं याः कुम्भेभिराभृताः । (अ १९-२-२)

१३० सुहवमग्ने कृत्तिका रोहिणी चास्तु भद्रं मृगशिरः शमार्द्रा ।
पुनर्वसू सूनृता चारु पुष्यो भानुराश्लेषा अयनं मघा मे । (अ १९-७-२)

१३१ शं नो मित्रः शं वरुणः शं विष्णुः शं प्रजापतिः ।
शं न इन्द्रो बृहस्पतिः शं नो भवत्वर्यमा । (अ १९-९-६)

१३२ शं नो मित्रः शं वरुणः शं विवस्वांछमन्तकः ।
उत्पाताः पार्थिवान्तरिक्षाः शं नो दिविचरा ग्रहाः । (अ १९-९-७)

१३३ शं नो भूमिर्वेप्यमाना शमुल्का निर्हतं च यत् ।
शं गावो लोहितक्षीराः शं भूमिरव तीर्यतीः । (अ १९-९-८)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१३४ नक्षत्रमुल्काभिहतं शमस्तु नः शं नो ऽभिचाराः शमु सन्तु कृत्याः ।
शं नो निखाता वल्गाः शमुल्का देशोपसर्गाः शमु नो भवन्तु । (अ १९-९-९)

१३५ शं नो ग्रहाश्चान्द्रमसाः शमादित्यश्च राहुणा ।
शं नो मृत्युर्धूमकेतुः शं रुद्रास्तिग्मतेजसः । (अ १९-९-१०)

१३६ शं रुद्राः शं वसवः शमादित्याः शमग्नयः ।
शं नो महर्षयो देवाः शं देवाः शं बृहस्पतिः । (अ १९-९-११)

१३७ शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या ।
शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ । (अ १९-१०-१)

१३८ शं नो भगः शमु नः शंसो अस्तु शं नः पुरंधिः शमु सन्तु रायः ।
शं नः सत्यस्य सुयमस्य शंसः शं नो अर्यमा पुरुजातो अस्तु । (अ १९-१०-२)

१३९ शं नो धाता शमु धर्ता नो अस्तु शं न उरूची भवतु स्वधाभिः ।
शं रोदसी बृहती शं नो अद्रिः शं नो देवानां सुहवानि सन्तु । (अ १९-१०-३)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

१४० शं नो अग्निर्ज्योतिरनीको अस्तु शं नो मित्रावरुणावश्विना शम् ।
शं नः सुकृतां सुकृतानि सन्तु शं न इषिरो अभि वातु वातः । (अ १९-१०-४)

१४१ शं नो द्यावापृथिवी पूर्वहूतौ शमन्तरिक्षं दृशये नो अस्तु ।
शं न ओषधीर्वनिनो भवन्तु शं नो रजसस्पतिरस्तु जिष्णुः । (अ १९-१०-५)

१४२ शं न इन्द्रो वसुभिर्देवो अस्तु शमादित्येभिर्वरुणः सुशंसः ।
शं नो रुद्रो रुद्रेभिर्जलाषः शं नस्त्वष्टा ग्नाभिरिह शृणोतु । (अ १९-१०-६)

१४३ शं नः सोमो भवतु ब्रह्म शं नः शं नो ग्रावाणः शमु सन्तु यज्ञाः ।
शं नः स्वरूणां मितयो भवन्तु शं नः प्रस्वः शम्वस्तु वेदिः । (अ १९-१०-७)

१४४ शं नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु शं नो भवन्तु प्रदिशश्चतस्रः ।
शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शं नः सिन्धवः शमु सन्त्वापः । (अ १९-१०-८)

१४५ शं नो अदितिर्भवतु व्रतेभिः शं नो भवन्तु मरुतः स्वर्काः ।
शं नो विष्णुः शमु पूषा नो अस्तु शं नो भवित्रं शम्वस्तु वायुः । (अ १९-१०-९)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१४६ शं नो देवः सविता त्रायमाणः शं नो भवन्तूषसो विभातीः ।
शं नः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः शं नः क्षेत्रस्य पतिरस्तु शंभुः । (अ १९-१०-१०)

१४७ शं नः सत्यस्य पतयो भवन्तु शं नो अर्वन्तः शमु सन्तु गावः ।
शं न ऋभवः सुकृतः सुहस्ताः शं नो भवन्तु पितरो हवेषु । (अ १९-११-१)

१४८ शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु शं सरस्वती सह धीभिरस्तु ।
शमभिषाचः शमु रातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवाः शं नो अप्याः । (अ १९-११-२)

१४९ शं नो अज एकपाद्देवो अस्तु शमहिर्बुध्न्यः शं समुद्रः ।
शं नो अपां नपात् पेरुरस्तु शं नः पृश्निर्भवतु देवगोपा । (अ १९-११-३)

१५० तदस्तु मित्रावरुणा तदग्ने शं योरस्मभ्यमिदमस्तु शस्तम् ।
अशीमहि गाधमुत प्रतिष्ठां नमो दिवे बृहते सादनाय । (अ १९-११-६)

१५१ मा नो मेधां मा नो दीक्षां मा नो हिंसिष्टं यत् तपः ।
शिवा नः शं सन्त्वायुषे शिवा भवन्तु मातरः । (अ १९-४०-३)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१५२ आयुषो ऽसि प्रतरणं विप्रं भेषजमुच्यसे ।
तदाञ्जन त्वं शंताते शमापो अभयं कृतम् । (अ १९-४४-१)

१५३ स्वादुष्टे अस्तु संसुदे मधुमान् तन्वे तव । सोमः शमस्तु ते हृदे । (अ २०-४-३)

१५४ आ त्वा विशन्त्वाशवः सोमास इन्द्र गिर्वणः । शं ते सन्तु प्रचेतसे । (अ २०-६९-५)

१५५ तद्वो गाय सुते सचा पुरुहूताय सत्वने । शं यद् गवे न शाकिने । (अ २०-७८-१)

१५६ वृषभो न तिग्मशृङ्गो ऽन्तर्यूथेषु रोरुवत् ।
मन्थस्त इन्द्र शं हृदे यं ते सुनोति भावयुर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः । (अ २०-१२६-१५)

भूर्भुवः स्वः । तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् । (य ३६-३)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शान्त्याहुतयः

१ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः
शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि। (य ३६-१७)

२ शान्ता द्यौः शान्ता पृथिवी शान्तमिदमुर्वन्तरिक्षम्।
शान्ता उदन्वतीरापः शान्ता नः सन्त्वोषधीः। (अ १९-९-१)

३ शान्तानि पूर्वरूपाणि शान्तं नो अस्तु कृताकृतम्।
शान्तं भूतं च भव्यं च सर्वमेव शमस्तु नः। (अ १९-९-२)

४ इयं या परमेष्ठिनी वाग् देवी ब्रह्मसंशिता। ययैव ससृजे घोरं तयैव शान्तिरस्तु नः। (अ १९-९-३)

५ इदं यत् परमेष्ठिनं मनो वां ब्रह्मसंशितम्।
येनैव ससृजे घोरं तेनैव शान्तिरस्तु नः। (अ १९-९-४)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६ इमानि यानि पञ्चेन्द्रियाणि मनः षष्ठानि मे हृदि ब्रह्मणा संशितानि ।
यैरेव ससृजे घोरं तैरेव शान्तिरस्तु नः । (अ १९-९-५)

७ यानि कानि चिच्छान्तानि लोके सप्तऋषयो विदुः ।
सर्वाणि शं भवन्तु मे शं मे अस्त्वभयं मे अस्तु । (अ १९-९-१३)

८ पृथिवी शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिर्द्यौः शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिर्
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे मे देवाः शान्तिः सर्वे मे देवाः शान्तिः शान्तिः शान्तिः शान्तिभिः ।
ताभिः शान्तिभिः सर्वशान्तिभिः शमयामोऽहं यदिह घोरं यदिह क्रूरं यदिह पापं
तच्छान्तं तच्छिवं सर्वमेव शमस्तु नः । (अ १९-९-१४)

भूर्भुवः स्वः । तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् । (य ३६-३)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नमस्काराहुतयः

१ उप त्वाग्ने दिवेदिवे दोषावस्तर्धिया वयम् । नमो भरन्त एमसि । (ऋ १-१-७)
२ देवं नरः सवितारं विप्रा यज्ञैः सुवृक्तिभिः । नमस्यन्ति धियेषिताः । (ऋ ३-६२-१२)
३ इन्द्रे अग्ना नमो बृहत् सुवृक्तिमेरयामहे । धियो धेना अवस्यवः । (ऋ ७-९४-४, सा ८००)
४ समस्य मन्यवे विशो विश्वा नमन्त कृष्टयः । समुद्रायेव सिन्धवः । (ऋ ८-६-४ सा १३७)
५ नमस्ते अग्न ओजसे गृणन्ति देव कृष्टयः । अमैरमित्रमर्दय । (ऋ ८-७५-१०, सा ११, १६४८)
६ दाशेम कस्य मनसा यज्ञस्य सहसो यहो । कदु वोच इदं नमः । (ऋ ८-८४-५, सा १५५०)
७ शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मा मा हिंसीः ।
निवर्त्तयाम्यायुषेऽन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय । (य ३-६३)
८ नमो मित्रस्य वरुणस्य चक्षसे महो देवाय तदृतं सपर्यत ।
दूरेदृशे देवजाताय केतवे दिवस्पुत्राय सूर्याय शंसत । (य ४-३५)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

९ अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम । (य ५-३६, ४०-१६)

१० नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च
नमः शिवाय च शिवतराय च । (य १६-४१)

११ नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते अस्त्वर्चिषे ।
अन्याँस्ते अस्मत् तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्यं शिवो भव । (य १७-११, ३६-२०)

१२ यो देवेभ्य आतपति यो देवानां पुरोहितः ।
पूर्वो यो देवेभ्यो जातो नमो रुचाय ब्राह्मये । (य ३१-२०)

१३ नमस्ते अस्तु विद्युते नमस्ते स्तनयित्नवे ।
नमस्ते भगवन्नस्तु यतः स्वः समीहसे । (य ३६-२१)

१४ दिव्यो गन्धर्वो भुवनस्य यस्पतिरेक एव नमस्यो विक्ष्वीड्यः ।
तं त्वा यौमि ब्रह्मणा दिव्य देव नमस्ते अस्तु दिवि ते सधस्थम् । (अ २-२-१)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

१५ यस्य भूमिः प्रमान्तरिक्षमुतोदरम् ।
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दिव्यं यश्चक्रे मूर्धानं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः । (अ १०-७-३२)

१६ यस्य सूर्यश्चक्षुश्चन्द्रमाश्च पुनर्णवः ।
अग्निं यश्चक्र आस्यं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः । (अ१०-७-३३)

१७ यस्य वातः प्राणापानौ चक्षुरङ्गिरसो ऽभवन् ।
दिशो यश्चक्रे प्रज्ञानीस्तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः । (अ १०-७-३४)

१८ यः श्रमात् तपसो जातो लोकान्त्सर्वान्त्समानशे ।
सोमं यश्चक्रे केवलं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः । (अ १०-७-३६)

१९ यो भूतं च भव्यं च सर्वं यश्चाधितिष्ठति ।
स्वर्यस्य च केवलं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः । (अ १०-८-१)

२० प्राणाय नमो यस्य सर्वमिदं वशे ।
यो भूतः सर्वस्येश्वरो यस्मिन्त्सर्वं प्रतिष्ठितम् । (अ ११-४-१)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

भूर्भुवः स्वः। तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। (य ३६-३)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्विष्टकृदाहुति

ओं यदस्य कर्मणो ऽत्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम्। अग्निष्टत् स्विष्टकृद्विद्यात् सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे। अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्द्धयित्रे सर्वान् नः कामान्त्समर्द्धय स्वाहा। इदमग्नये स्विष्टकृते इदं न मम। (शतपथ० १४-९-४-२४)

प्राजापत्याहुति

ओं प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये इदं न मम।

पूर्णाहुति

ओं सर्वं वै पूर्णं स्वाहा। [तीन बार]

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आशीर्वाद [पुष्पवर्षा-सहित]

[ब्रह्मा बुलवाये और सब बोलें ।]

ओं सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः । (य० १२-४४)
ओं सौभाग्यमस्तु ।
ओं शुभं भवतु ।

ओं स्वस्ति ओं स्वस्ति ओं स्वस्ति

वामदेव्य-गान

१) ओं भूर्भुवः स्वः । कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा ।
कया शचिष्ठया वृता । (य ३६-४)
सदा सुमहान् चित्र,
होवे हमारा सखा,
आनन्दमयी रक्षा, आनन्दमयी प्रबल प्रेमगति के साथ ।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२) ओं भूर्भुवः स्वः । कस्त्वा सत्यो मदानां मंहिष्ठो मत्सदन्धसः ।
दृढा चिदारुजे वसु । (य ३६-५)
आनन्दों का बढ़ानेवाला कौनसा सत्य,
तुझे प्रसन्न करे आनन्द-हवि से ।
न्योछावर करता हूं दृढ़ प्राण ।

३) ओं भूर्भुवः स्वः । अभी षु णः सखीनामविता जरितॄणाम् ।
शतं भवास्यूतिभिः । (य ३-६)
स्तुति करनेवाले हम सखाओं का,
होरहा है तू सर्वतः सुष्ठु रक्षक,
शतशः सुरक्षाओं के साथ ।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स वि ता

वेद-संस्थान, अजमेर का मासिक

सांस्कृतिक प्रेरणा का विचार-प्रधान पत्र

सम्पादक : अभयदेव शर्मा, एम. ए. (हिन्दी, संस्कृत)

वार्षिक मूल्य : पांच रुपये; एक प्रति बयालीस पैसे। पृष्ठ सं० २०×३०/८=२४ पृष्ठ।

- वेदों को सर्वसाधारण की पहुंच में लाने वाला एकमात्र पत्र, जिसकी विशेषता है वेदमंत्रों की सरल, जीवनोपयोगी, रोचक व्याख्याएं।
- वेद के विद्वानों के लिए गवेषणात्मक लेखों से, तथा जन-सामान्य के लिए वेदपरिचायक एवं वेदव्याख्यापरक, सुबोध, लेखों सें युक्त।
- वेदविषयक विविध विचारधाराओं के निष्पक्ष, खुले, साधार घर्षण एवं मंथन का माध्यम, ताकि तथ्यातथ्य का निर्णय पाठक स्वयं विवेकपूर्वक कर सके।
- विचारोत्तेजक, मननीय संपादकीय।
- श्रीमद्भगवद्गीता, पातञ्जल योगदर्शन आदि भारतीय वाङ्मय के रत्नों की जनसुबोध एवं जीवन में चरितार्थ होने योग्य टीकाएं।
- विविध सांस्कृतिक विषयों पर अभिनव लेख।
- मस्तिष्क और हृदय की उदारता का प्रतिपादक पत्र, जो विश्वमानव को विश्वधर्म—वेद का शाश्वत सन्देश देता है।

वे द - सं स्था न, पो० बॉ० १५०, अजमेर (भारत)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

'विदेह'–रचित संस्थान-साहित्य

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेदव्याख्या-ग्रन्थ

१. प्रथम पुष्प (द्वितीय संस्करण)	दो रुपये
२. द्वितीय पुष्प (द्वितीय „)	डेढ़ रुपये
३. तृतीय पुष्प	दो रुपये
४. चतुर्थ पुष्प	एक रुपया
५. पञ्चम पुष्प	डेढ़ रुपये
६. षष्ठ पुष्प	एक रुपया
७. सप्तम पुष्प	डेढ़ रुपये
८. अष्टम पुष्प	डेढ़ रुपये
९. नवम पुष्प	एक रुपया

योग-ग्रन्थमाला

१. साधना (तृतीय सं०)	एक रुपया
२. स्वास्थ्य और सौन्दर्य (तृतीय सं०)	५० पैसे
३. वैदिक योग-पद्धति (तृतीय सं०)	४० पैसे
४. सन्ध्या-योग (तृतीय सं०)	३० पैसे
५. गायत्री मन्त्र का अनुष्ठान (तृतीय सं०)	२० पैसे
६. महामृत्युञ्जय-मन्त्र का अनुष्ठान (द्वितीय सं०)	२५ पैसे
७. योग-तरङ्ग	२० पैसे
८. शिव-संङ्कल्प	३० पैसे
९. वैदिक साधना	५० पैसे

भक्ति-ग्रन्थमाला

१. गायत्री (चतुर्थ सं०)	एक रुपया
२. विदेह-गीतावली (द्वितीय सं०)	४० पैसे
३. आनन्द-सुधा (द्वितीय सं०)	४० पैसे
४. जीवन-पाथेय	५० पैसे

चरित-ग्रन्थमाला

१. रामचरित	डेढ़ रुपये
२. दयानन्द चरितामृत	एक रुपया
३. जीवन-ज्योतियां (द्वितीय सं०)	३० पैसे

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्थान-प्रकाशन

शिक्षा-ग्रन्थमाला

१. वैदिक बालशिक्षा, प्रथम भाग (पंचम सं०) ५० पैसे
२. ,, ,, द्वितीय भाग (तृतीय सं०) ५० पैसे
३. ,, ,, तृतीय भाग ७० पैसे
४. वैदिक स्त्री-शिक्षा (द्वितीय सं०) ४० पैसे
५. संस्कृत-शिक्षा, प्रथम भाग (तृतीय सं०) २० पैसे
६. ,, द्वितीय भाग (तृतीय सं०) ४० पैसे
७. संस्कृत-स्वयं-शिक्षक, प्रथम पुष्प (द्वितीय सं०) ७० पैसे
८. ,, द्वितीय पुष्प (किशोरीलाल गुप्त) ७० पैसे

कर्मकाण्ड-ग्रन्थमाला

१. स्वस्ति-याग (तृतीय सं०) ८० पैसे
२. सत्यनारायण की कथा (चतुर्थ सं०) ३० पैसे
३. वैदिक सत्सङ्ग (पंचम सं०) ३० पैसे
४. विजय-याग (द्वितीय सं०) ५० पैसे

मिश्रित-ग्रन्थमाला

१. सार्वभौम आर्य साम्राज्य (द्वितीय सं०) ५० पैसे
२. यज्ञोपवीत-रहस्य (चतुर्थ सं०) ६ पैसे
३. स्वभाव और सुख दुःख २० पैसे
४. मानव-धर्म (द्वितीय सं०) २० पैसे
५. चरित्र-निर्माण (द्वितीय सं०) २० पैसे
६. गृहस्थाश्रम (द्वितीय सं०) ५० पैसे
७. भारत के अध्यापकों से (द्वितीय सं०) ३० पैसे
८. भारत के विद्यार्थियों से (द्वितीय सं०) ३० पैसे

English–Lakshmi Vedic Series

1. The Vedic Prayers Rs. 2/–
2. The Exposition of the Vedas Rs. 4/–

'सविता' की पुरानी जिल्दें (वर्ष ४, ५, ८-१०, १५-१९) !

वेद-संस्थान, पो. बॉ. १५०, अजमे

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.